

देश दर्पण संवाद

— राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक — हम खबर नहीं, आईना दिखाते है



अपने लेख या सुझाव भेजने के लिए इस QR कोड को स्कैन करें

इंदौर, मध्य प्रदेश सोमवार 21 सितंबर 2026, भाद्रपद शुक्ल - 10, 2083, वर्ष - 1, अंक - 02, पृष्ठ - 8 , मूल्य - ₹ 2

खराखरा

18 कैंरेट : ₹1,21,144
22 कैंरेट : ₹1,47,957
24 कैंरेट : ₹1,60,718

सकारात्मक सोमवारसर:

प्रिय पाठकों, सप्रेम नमस्कार! शुभ सोमवार!

आज 'देश दर्पण संवाद' के सफर का यह दूसरा सोमवार है, और हमें आपके हाथों में अपना यह दूसरा अंक सौंपते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है।

पिछले सप्ताह हमारे प्रथम अंक को आप सभी का जो अपार स्नेह, विश्वास और सकारात्मक मार्गदर्शन मिला, उसने निष्पक्ष पत्रकारिता के प्रति हमारे संकल्प को और भी दृढ़ किया है।

पहले अंक की सफलता आपके समर्थन के बिना संभव नहीं थी, और इसके लिए हम हृदय से आपके आभारी हैं। एक नए सप्ताह की इस नई सुबह में, हम फिर से पूरे उत्साह के साथ आपके सामने ताज़ा, सटीक और बेबाक खबरें लेकर उपस्थित हैं।

हमारा यह प्रयास निरंतर जारी रहेगा कि हम आपके आस-पास की हर उस खबर और मुद्दे को प्रमुखता से उठाएं, जिसका सीधा सरोकार आपसे और समाज से है। इस नए सप्ताह के लिए आप सभी को ढेरों शुभकामनाएँ।

आशा है कि यह सप्ताह आपके जीवन में नई ऊर्जा, सफलता और सकारात्मकता लेकर आएगा। 'देश दर्पण संवाद' के साथ इसी तरह अपना जुड़ाव बनाए रखें। आपका दिन और सप्ताह मंगलमय हो!

सेमीकंडक्टर क्षेत्र में भारत की नई छलांग

नई दिल्ली। भारत के सेमीकंडक्टर क्षेत्र के लिए 19 सितंबर 2026 का दिन महत्वपूर्ण रहा। राजधानी नई दिल्ली के यशोभूमि में तीन दिवसीय SEMICON India 2026 सम्मेलन का सफल समापन हुआ। सम्मेलन में 52 देशों के प्रतिनिधियों, 600 से अधिक प्रदर्शकों और करीब 300 अंतरराष्ट्रीय कंपनियों ने हिस्सा लिया। इस दौरान कुल 51,656 पंजीकरण हुए और लगभग 40,000 लोगों की उपस्थिति दर्ज की गई। सम्मेलन की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में भारत में वाणिज्यिक सेमीकंडक्टर उत्पादन का विस्तार रहा। सेमीकंडक्टर इकाइयां परिचालन में आ गई हैं। सरकार ने अगले चरण के लिए Semicon 2.0 के तहत ₹1,27,500 करोड़ के निवेश की योजना भी बताई।

मिशन 80: कूनो में गूंजेगी और चीतों की दहाड़, कुनबा बढ़ाने के लिए 6 मादाओं पर टिकी सबसे बड़ी उम्मीद!

श्योपुर (मध्य प्रदेश): भारत में चीतों की वापसी के बाद अब मध्य प्रदेश के श्योपुर स्थित कूनो नेशनल पार्क (Kuno National Park) में उनका कुनबा तेजी से बढ़ाने की महत्वाकांक्षी कार्ययोजना पर काम शुरू हो गया है। वन विभाग और कूनो प्रबंधन ने चीतों की वर्तमान संख्या को 49 से बढ़ाकर 80 तक ले जाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। इसके लिए खुले जंगल और विशेष रूप से तैयार किए गए बाड़ों में चीतों की सुरक्षित मैटिंग (प्रजनन) कराने की रणनीति बनाई गई है।

सुरक्षित मैटिंग के लिए दोहरी रणनीति

चीतों के प्रजनन को बढ़ावा देने और शावकों की मृत्यु दर को कम करने के लिए प्रबंधन ने पूरी तैयारी कर ली है। जो चीते पूरी तरह से जंगल के

माहौल में ढल चुके हैं, उनकी मैटिंग खुले जंगल में ही प्राकृतिक रूप से कराने पर जोर दिया जा रहा है। वहीं, सुरक्षा और गहन निगरानी को ध्यान में रखते हुए कुछ चीतों की मैटिंग बड़े बाड़ों (Enclosures) में कराई जाएगी, ताकि किसी भी विपरीत परिस्थिति या आपसी संघर्ष के दौरान वन्यजीव चिकित्सक तुरंत हस्तक्षेप कर सकें।

8 महीने तक शावकों के साथ ही रहेंगी चार मादाएं

कूनो में वर्तमान में चार मादा चीते अपने शावकों का पालन-पोषण कर रही हैं। प्रबंधन के अनुसार, ये चारों मादाएं कम से कम अगले आठ महीने तक अपने शावकों के साथ ही रहेंगी। इस संवेदनशील अवधि के दौरान उन्हें प्रजनन प्रक्रिया से दूर रखा जाएगा, जिससे शावकों का बिना

किसी बाधा के सही तरीके से विकास हो सके और वे अपनी मां से जंगल में शिकार करने और खुद को बचाने की बुनियादी कला सीख सकें।

इन 6 मादा चीतों पर टिका है लक्ष्य का दारोमदार

चीतों का कुनबा 80 तक पहुंचाने के इस बड़े लक्ष्य की सफलता मुख्य रूप से 6 अन्य मादा चीतों पर टिकी हुई है। कूनो प्रबंधन इन 6 मादाओं की स्वास्थ्य स्थिति, उनके व्यवहार और नर चीतों के प्रति उनकी प्रतिक्रिया की लगातार मॉनिटरिंग कर रहा है। आने वाले समय में इन्हीं मादाओं को मैटिंग के लिए प्राथमिकता दी जाएगी।

‘प्रोजेक्ट चीता’ के तहत भारत में यह चरण बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा

है। यदि खुले जंगल और बाड़ों में प्रजनन की यह योजना सफल रहती है, तो कूनो नेशनल पार्क आने वाले समय में चीतों की एक बड़ी, स्वस्थ और आत्मनिर्भर आबादी वाला दुनिया का प्रमुख केंद्र बन जाएगा।



वर्ल्ड रिकॉर्ड

3 मिनट में जले 33.27 लाख दीये,
9 लाख दीपों से उकेरा गया पीएम मोदी का चित्र

महाकाल की नगरी में बना वर्ल्ड रिकॉर्ड



उज्जैन: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 76वें जन्मदिवस पर पूरा देश 'सेवा संकल्प अभियान' और एक अभूतपूर्व दीपोत्सव का गवाह बना। बाबा महाकाल की पवित्र नगरी उज्जैन ने इस अवसर पर एक नया विश्व रिकॉर्ड कायम कर इतिहास रच दिया है। शिप्रा नदी के छह घाटों से लेकर श्री महाकाल लोक तक महज 3 मिनट में 33.27 लाख दीये प्रज्वलित किए गए। दीपों की इस श्रृंखला ने जहां उज्जैन को स्वर्णिम आभा से रोशन कर दिया, वहीं इस आयोजन का सबसे बड़ा आकर्षण 9 लाख दीयों से उकेरा गया प्रधानमंत्री मोदी का विशाल और मनमोहक चित्र रहा, जिसने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

मध्य प्रदेश में आस्था का महाकुंभ

उज्जैन के कार्तिक मेला मैदान में आयोजित मुख्य कार्यक्रम के साथ-साथ पूरे मध्य प्रदेश में इस अवसर को एक महापर्व के रूप में मनाया गया। भोपाल, इंदौर और ग्वालियर समेत प्रदेश भर में कुल 3.55 करोड़ दीये जलाकर प्रधानमंत्री के स्वस्थ जीवन और दीर्घायु की कामना की गई। देशभर में दिखा दीपोत्सव का उल्लास: कहां, कितने जले दीये? दीपोत्सव की यह भव्यता केवल मध्य प्रदेश तक सीमित नहीं रही, बल्कि पूरे देश में इसके अद्भुत नजारे देखने को मिले: विशाल चित्र का निर्माण: 9 लाख दीयों का विशेष रूप से उपयोग कर पीएम मोदी का एक भव्य चित्र (पोट्रेट) बनाया गया, जो इस दीपोत्सव की सबसे अनूठी और ऐतिहासिक प्रस्तुति रही। गुजरात: प्रधानमंत्री के गृह राज्य में जनता ने भारी उत्साह दिखाते हुए 88 लाख से अधिक दीये जलाए। ओडिशा: पूर्वी भारत में भी इस दीपोत्सव की व्यापक

चमक दिखी, जहां करीब 1 करोड़ दीपों से पूरा राज्य जगमगा उठा।

दिल्ली: राष्ट्रीय राजधानी के ऐतिहासिक कर्तव्य पथ पर 1.25 लाख दीये प्रज्वलित किए गए, जो आम जनमानस के आकर्षण का प्रमुख केंद्र बने। महाराष्ट्र (नागपुर): यहां 500 लाभार्थियों ने विशेष रूप से 'आशीर्वाद का दीया' जलाकर प्रधानमंत्री के प्रति अपनी कृतज्ञता और समर्थन व्यक्त किया। अन्य प्रमुख स्थान: इन प्रमुख राज्यों के अलावा उत्तर प्रदेश (काशी विश्वनाथ धाम और राम की पेड़ी), उत्तराखंड (चारधाम) और देश के हर छोटे-बड़े जिले व पंचायत स्तर पर भी लाखों की संख्या में अतिरिक्त दीये जलाए गए।

वैश्विक पटल से मिलीं शुभकामनाएं

प्रधानमंत्री मोदी की वैश्विक लोकप्रियता की झलक उनके 76वें जन्मदिन पर स्पष्ट रूप से दिखाई दी। दुनिया के कई दिग्गज और प्रभावशाली नेताओं ने उन्हें शुभकामनाएं प्रेषित कीं। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू और इटली की प्रधानमंत्री जोर्जिया मेलोनी ने पीएम मोदी को बधाई दी। इसके साथ ही, अमेरिकी दूतावास के माध्यम से पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ओर से भी उन्हें जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं दी गईं। देशभर में दीपों के इस महाआयोजन और विश्वभर से मिले बधाई संदेशों ने प्रधानमंत्री के जन्मदिन को एक ऐतिहासिक पर्व में बदल दिया। 'सेवा संकल्प अभियान' के तहत देश भर में हुए जनसेवा के कार्य और दीपों की यह अंतहीन कतार, भारत के नेतृत्व की वैश्विक स्वीकार्यता और देशवासियों के अटूट विश्वास का सबसे बड़ा प्रमाण है।

एमपी में हाई वोल्टेज सियासत: राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने के बाद पहली बार इंदौर पहुंचे नितिन नवीन

देश दर्पण संवाद / इंदौर।

मध्य प्रदेश में इस सप्ताह सियासी पारा सातवें आसमान पर रहा। दिग्गजों के ताबड़तोड़ दौरों ने प्रदेश की राजनीति में खासी गर्माहट ला दी है। एक तरफ जहां भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने के बाद नितिन नवीन ने अपने पहले इंदौर दौरे पर लोकसभा नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी को आड़े हाथों लिया, वहीं दूसरी तरफ राज्य सरकार ने 'स्वामित्व योजना' के तहत 50 लाख संपत्तियों की मुफ्त रजिस्ट्री का ऐतिहासिक ऐलान कर बड़ा मास्टरस्ट्रोक चला है।

राहुल पर नवीन का सीधा हमला 17 सितंबर को अपनी नई जिम्मेदारी के बाद पहली बार मध्य प्रदेश की आर्थिक राजधानी इंदौर पहुंचे नितिन नवीन ने कांग्रेस और

राहुल गांधी पर तीखा प्रहार किया। आगामी 19 सितंबर को होने वाले राहुल गांधी के 'छात्रों की गुंज' कार्यक्रम पर तंज कसते हुए नवीन ने कहा कि प्रधानमंत्री के ऐतिहासिक काम और सत्ता का दरवाजा न खुल पाने के कारण राहुल गांधी भारी बैचैनी में हैं। उन्होंने कांग्रेस से सीधा सवाल दागा, "जो लोग आज युवाओं की बात कर रहे हैं, जब उनकी सरकार थी, तब उन्होंने युवाओं को लोन देने या रोजगार के लिए क्या सोचा था?" नवीन ने दावा किया कि आज देश में 2 लाख से ज्यादा स्टार्टअप चल रहे हैं और अब देश का युवा रोजगार मांगने वाला नहीं, बल्कि रोजगार देने वाला बन रहा है।

दिग्गजों के दौरों से हाईरहा सियासी पारा इस पूरे हफ्ते प्रदेश में युवाओं को



पत्रकारिता के उत्त्व मापदंडों पर खरे उतरने के लिए बप्पा हमें विवेक और शक्ति प्रदान करें, यही हमारी मंगलकामना है। सत्य को सामने लाने की 'देश दर्पण संवाद' की इस नई यात्रा में युथी पाठकों का रनेह, समर्थन और विश्वास ही हमारी सबसे बड़ी पूंजी बनेगा।

इसू चुनाव

एबीवीपी का शानदार प्रदर्शन, निर्दलीय दीपांशु शौकीन ने उपाध्यक्ष पद जीतकर रचा इतिहास



नई दिल्ली: दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ (इसू) चुनाव के परिणाम घोषित हो चुके हैं। इन चुनावों में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) ने अपना दबदबा कायम रखते हुए केंद्रीय पैनल के चार में से तीन पदों पर शानदार जीत दर्ज की है।

वहीं, इस बार का चुनाव एक ऐतिहासिक घटना का गवाह भी बना, जब इसू के इतिहास में पहली बार किसी निर्दलीय प्रत्याशी ने उपाध्यक्ष पद पर क जा जमाया।

दूसरी तरफ, एनएसयूआई (NSUI) का इस बार सूफड़ा साफ हो गया और वह अपना एकमात्र पिछला पद भी गंवा बैठी।

विजेताओं का विवरण और जीत का अंतर:

- अध्यक्ष पद: एबीवीपी के यश डबास ने 2,053 वोटों के अंतर से जीत हासिल की। उन्हें कुल 24,576 वोट मिले, जबकि उनके मुख्य प्रतिद्वंद्वी एनएसयूआई के विजय शंकर मीणा को 22,523 वोट प्राप्त हुए।
- उपाध्यक्ष पद (ऐतिहासिक जीत): निर्दलीय प्रत्याशी दीपांशु शौकीन ने सभी को चौंकाते हुए 13,705 वोटों के भारी अंतर से एकतरफा जीत दर्ज की। उन्हें 30,615 वोट मिले, जबकि एबीवीपी के ईशु मौर्या 16,910 वोटों के साथ दूसरे स्थान पर रहे।
- सचिव पद: एबीवीपी की रिया छावड़ी ने 21,650 वोट हासिल कर जीत दर्ज की। उन्होंने एनएसयूआई की नम्रता चौधरी (14,869 वोट)

को 6,781 वोटों से हराया।

■ संयुक्त सचिव पद: एबीवीपी के लक्ष्य राज सिंह ने बेहद कड़े मुकाबले में 837 वोटों से जीत हासिल की। उन्हें 16,615 वोट मिले, जबकि समाजवादी छात्र सभा (एससीएस) के विशेष यादव को 15,778 वोट मिले, और एनएसयूआई के गोपाल चौधरी 15,206 वोटों के साथ तीसरे नंबर पर है।

विपक्ष का सूफड़ा साफ और उठे सवाल...

इस चुनाव में वामपंथी गठबंधन (आइसा और एसएफआई) कोई भी पद जीतने में नाकाम रहा। चुनाव परिणामों के बाद कुछ विवाद भी सामने आए हैं:

- एनएसयूआई के अध्यक्ष पद के उम्मीदवार विजय शंकर मीणा ने स्वामी श्रद्धानंद, रामजस और शिवाजी कॉलेज समेत कुछ कॉलेजों में फर्जी और जबरन मतदान का आरोप लगाते हुए कोर्ट जाने की चेतावनी दी है।
- वहीं, संयुक्त सचिव पद पर मामूली अंतर से मिली हार के बाद एससीएस के उम्मीदवार विशेष यादव के समर्थकों ने नॉर्थ कैपस स्थित आर्ट्स फैकल्टी के बाहर प्रदर्शन किया और मतदान में अनियमितताओं का आरोप लगाते हुए दोबारा मतगणना (री-काउंटिंग) की मांग की।



MP सरकार का अगला बड़ा दांव: वल्लभ भवन में ‘मेगा सर्जरी’ की आहट, क्या 2028 के लिए बिछने लगी है प्रशासनिक बिसात?

मध्य प्रदेश की ब्यूरोक्रेसी में जल्द ही बड़े बदलाव देखने को मिल सकते हैं। सरकार 2028 के विधानसभा चुनावों को ध्यान में रखते हुए मैदानी स्तर पर प्रशासनिक कसावट लाने की तैयारी में है। कई जिलों के कलेक्टर और मंत्रालयों के बड़े चेहरों की कुर्सियां बदल सकती हैं।



भोपाल । मध्य प्रदेश के सत्ता केंद्र ‘वल्लभ भवन’ के गलियारों में इन दिनों एक ही चर्चा सबसे ज्यादा गर्म है— ब्यूरोक्रेसी में एक ‘मेगा सर्जरी’। अंदरखाने से आ रही खबरों की मानें तो राज्य सरकार जल्द ही प्रशासन में बड़े स्तर पर फेरबदल करने जा रही है। इसका मकसद सिर्फ रूटीन ट्रांसफर नहीं है, बल्कि सरकार की नजरें सीधे तौर पर 2028 के विधानसभा चुनावों और अपनी प्लेगशिप योजनाओं की जमीनी हकीकत पर टिकी हैं।

क्यों महसूस हो रही है बदलाव की जरूरत?

सरकार का पूरा फोकस इस वक्त गुड गवर्नंस (सुशासन) और योजनाओं की फास्ट ट्रैक डिलीवरी पर है। हाल ही में मुख्यमंत्री स्तर पर हुई कई समीक्षा बैठकों में यह बात सामने आई है कि कुछ विभागों और जिलों में योजनाओं का क्रियान्वयन उस रफ्तार से नहीं हो रहा, जिसकी सरकार को उम्मीद है। ऐसे में ‘परफॉर्म या साइडलाइन’ का फॉर्मूला सख्ती से लागू किया जा सकता है। मैदानी स्तर पर जनता की नाराजगी को दूर करने के लिए उन अधिकारियों को कमान सौंपी जा सकती है, जिनका पब्लिक कनेक्ट और डिलीवरी रिकॉर्ड शानदार रहा है।

किन विभागों और जिलों पर गिरेगी गाजर?

सूत्रों का कहना है कि इस प्रशासनिक सर्जरी में स्वास्थ्य, शिक्षा, पंचायत एवं ग्रामीण विकास, और नगरीय प्रशासन जैसे सीधे जनता से जुड़े विभागों के प्रमुख सचिवों से लेकर कई अहम जिलों के

कलेक्टर बदले जा सकते हैं। चुनाव भले ही 2028 में हैं, लेकिन सरकार जानती है कि किसी भी सत्ता विरोधी लहर (Anti-incumbency) को रोकने के लिए मैदानी अफसरों का चुस्त होना सबसे जरूरी है।

विपक्ष की भी है पैनी नजर

इस संभावित फेरबदल पर विपक्ष भी नजर गड़ाए हुए है। कांग्रेस अक्सर आरोप लगाती रही है कि मध्य प्रदेश में अफसरशाही हावी है और जनहित के काम अटके हुए हैं। ऐसे में सरकार इस फेरबदल के जरिए विपक्ष के हाथों से यह मुद्दा भी छीनना चाहती है। अब देखना यह दिलचस्प होगा कि जब ट्रांसफर की यह नई लिस्ट सामने आती है, तो उसमें किन अधिकारियों का कद बढ़ता है और किन्हें लुप लाइन का रास्ता दिखाया जाता है। लेकिन एक बात तो साफ है कि मध्य प्रदेश में चुनावी बिसात बिछने की शुरुआत अब प्रशासनिक मोहरे सेट करने से हो चुकी है।

‘पट्टा है पर रजिस्ट्री नहीं’ का झंझट खत्म

भोपाल । रविवार को आगर-मालवा के मंच से मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जो ऐलान किए, वो सिर्फ रूटीन सरकारी घोषणाएं नहीं हैं। यह मध्य प्रदेश की एक बहुत बड़ी आबादी की उस परेशानी का सीधा इलाज है, जिससे वे दशकों से जूझ रहे थे। एक तरफ जहां सरकार ने 1.25 करोड़ से ज्यादा ‘लाइली बहनों’ के बैंक खातों में 1835 करोड़ रुपये की राशि सिंगल क्लिक से ट्रांसफर की, वहीं 50 लाख गरीब और मध्यम वर्गीय परिवारों को जिंदगी भर की टेंशन से मुक्त करने का ऐसा दांव चला है, जिसकी गूंज पूरे प्रदेश में सुनाई दे रही है।

आखिर यह खबर इतनी अहम क्यों है?

जमीनी हकीकत यह है कि प्रदेश में लाखों ऐसे परिवार हैं, जिनके पास जमीन या मकान का पट्टा तो है, लेकिन पक्की रजिस्ट्री नहीं है। कारण? रजिस्ट्री में लगने वाली भारी-भरकम फीस और स्टाम्प ड्यूटी। बिना पक्की रजिस्ट्री के न तो उस संपत्ति पर बैंक से कोई लोन मिलता है और न ही मालिकाना हक पूरी तरह से सुरक्षित महसूस होता है। इसी न.ज.को पकड़ते हुए मुख्यमंत्री ने ऐलान किया है कि प्रदेश के ऐसे सभी 50 लाख पट्टेधारियों की पक्की रजिस्ट्री अब निशुल्क होगी। यानी रजिस्ट्री का एक-एक पैसा राज्य सरकार अपने खजाने से भरेगी। 17 सितंबर से ‘स्वामित्व अधिकार अभिलेख निष्पादन योजना-2026’ के तहत यह महा-अभियान शुरू होने जा रहा है। सियासी और सामाजिक दोनों ही पैमानों पर यह मोहन सरकार का एक बड़ा मास्टरस्ट्रोक माना जा रहा है।

‘नारेबाजी नहीं, बहनों को आर्थिक रूप से मजबूत करेंगे’

लाइली बहना योजना की किशत जारी करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने स्पष्ट किया कि प्रदेश सरकार का विजन सिर्फ योजनाएं चलाना नहीं है। उन्होंने



दो टूक कहा, “नारी सशक्तिकरण केवल नारों से नहीं हो सकता। बहनों को लाभ कमाने वाली बनाना होगा और हमारी सरकार इसके लिए पूरी तरह दृढ़ संकल्पित है।” इस कार्यक्रम में अकेले आगर-मालवा जिले की 1 लाख 13 हजार से अधिक बहनों को सीधा फायदा पहुंचा है। सितंबर के इस पूरे महीने को सरकार ने ‘जनसेवा’ को समर्पित किया है।

अब गांवों और पंचायतों तक दौड़ेगी बसें

ग्रामीण इलाकों की एक बड़ी पीड़ा परिवहन की कमी रही है। इसे दूर करने के लिए भी मंच से बड़ी बात कही गई। मुख्यमंत्री ने कहा कि आवागमन को सुलभ बनाने के लिए सरकार ऐसी व्यवस्था कर रही है कि अब बसें सिर्फ शहरों या हाईवे तक सीमित न रहें, बल्कि वे सीधे गांवों, कस्बों और पंचायतों तक पहुंचें। लब्धोलुआब: 50 लाख लोगों को मुफ्त रजिस्ट्री, महिलाओं के खाते में लगातार पैसा और गांवों तक बसों की पहुंच—यह साफ बताता है कि सरकार का पूरा फोकस अब उन बुनियादी जरूरतों पर है, जो सीधे तौर पर आम आदमी की जिंदगी और प्रदेश के बड़े वोटर बैंक को प्रभावित करती हैं।

राजधानी में खास

330 करोड़ की बंपर कमाई वाली ‘हनुमान अंश’ में भोपाल का डंका: 8 साल के सात्विक ने ‘शुभंकर’ बन लूटी महफिल

महज 2 करोड़ के बजट में बनी फिल्म ने रचा 100 गुना कमाई का ऐतिहासिक कीर्तिमान, भारी-भरकम संवादों को सहजता से बोलकर राजधानी के नन्हे कलाकार ने जीता देशभर का दिल।



● **प्रकाश त्रिपाठी** भारतीय सिनेमा के इतिहास में 7 अगस्त 2026 का दिन एक नया अध्याय लेकर आया। बिना किसी भारी-भरकम स्टारकास्ट और महज 2 करोड़ रुपये के सीमित बजट में बनी फिल्म ‘हनुमान अंश’ ने बॉक्स ऑफिस पर जो सुनामी ला दी है, उसकी गूंज पूरे देश में सुनाई दे रही है। फिल्म ने अपनी लागत से सौ गुना से अधिक की कमाई करते हुए 330 करोड़ रुपये से ज्यादा का जादूई कलेक्शन कर लिया है। लेकिन, इस ब्लॉकबस्टर सफलता के बीच जिस एक चेहरे ने दर्शकों और समीक्षकों का सबसे ज्यादा ध्यान खींचा है, वह है राजधानी भोपाल का 8 वर्षीय नन्हा सितारा— सात्विक शर्मा।

फिल्म में ‘शुभंकर’ का बेहद अहम किरदार निभाने वाले सात्विक ने अपनी मासूमियत और बेजोड़ अभिनय से बड़े पर्दे पर एक ऐसी छाप छोड़ी है, जिसकी हर तरफ चर्चा हो रही है। ‘हनुमान अंश’ में सात्विक के हिस्से में कई ऐसे मुश्किल और संस्कृतनिष्ठ संवाद (डायलॉग्स) आए थे, जिन्हें बोलना अनुभवी कलाकारों के लिए भी चुनौती होता है। मगर 8 साल के इस बाल कलाकार ने कैमरे के सामने जिस आत्मविश्वास के साथ डायलॉग डिलीवरी की, उसने दर्शकों को दांतों तले उंगली दबाने पर मजबूर कर दिया।

4 साल की उम्र से शुरू हुआ अभिनय का सफर

सात्विक के लिए कैमरे का सामना करना कोई नई बात नहीं है। जब आम बच्चे खिलौनों से खेलते हैं, तब महज 4 साल की उम्र में सात्विक ने एक्टिंग की दुनिया में कदम रख दिया था। इससे पहले भी वे कई वेब सीरीज और टेलीविजन विज्ञापनों में अपने अभिनय का

हुनर दिखा चुके हैं। मगर ‘हनुमान अंश’ उनके करियर के लिए एक बड़ा मील का पत्थर साबित हुई है। सेट पर उनके पेशेवर रवैये और डायलॉग्स याद करने की क्षमता से फिल्म की पूरी यूनिट हैरान थी। “राम जी और हनुमान जी की कृपा से आसान हुए संवाद” अपने अनुभव साझा करते हुए सात्विक बड़ी ही मासूमियत से बताते हैं कि शुरुआत में उन्हें कुछ भारी-भरकम संवाद बोलने में थोड़ी झिझक हो रही थी। लेकिन उन्होंने मन ही मन भगवान राम और हनुमान जी का ध्यान किया, और उनकी कृपा से सारे कठिन डायलॉग आसानी से बोल लिए। उनकी इस बात ने न केवल सेट पर मौजूद लोगों का दिल जीता, बल्कि यह फिल्म की मूल भावना के साथ भी गहराई से जुड़ता है।

राजधानी के लिए गौरव का क्षण

एक तरफ जहां ‘हनुमान अंश’ भारतीय सिनेमाघरों में लगातार हाउसफुल चल रही है, वहीं भोपालवासियों के लिए यह दोहरी खुशी का मौका है। सात्विक की सफलता ने यह साबित कर दिया है कि राजधानी की मिट्टी में कला और प्रतिभा कूट-कूट कर भरी है। पढ़ाई और शूटिंग के बीच बेहतरीन तालमेल बिठाने वाले सात्विक आज अपने स्कूल और पूरे शहर के लिए एक ‘सुपरस्टार’ बन चुके हैं। जिस तरह से सात्विक ने इतनी छोटी सी उम्र में अपनी कला का लोहा मनवाया है, उसे देखकर यह कहना गलत नहीं होगा कि मध्य प्रदेश का यह नन्हा ‘शुभंकर’ आने वाले समय में भारतीय सिनेमा का एक चमकता हुआ सितारा बनेगा।

भोपाल में संघ का महा-समागम: 5 जिलों के 30 हजार स्वयंसेवक जुटेंगे, दत्तात्रेय होसबोले देंगे राष्ट्र सेवा का मंत्र

भोपाल। झीलों की नगरी भोपाल आज राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) के एक ऐतिहासिक और विशाल समागम की गवाह बनने जा रही है।

शहर में आज अद्भुत अनुशासन, ऊर्जा और राष्ट्रभक्ति का नजारा देखने को मिलेगा, क्योंकि यहाँ 5 अलग-अलग जिलों से करीब 30,000 स्वयंसेवक एक साथ जुट रहे हैं। इस भव्य कार्यक्रम के मुख्य वक्ता संघ के सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबोले होंगे।

उनके विचारों और मार्गदर्शन को सुनने के लिए स्वयंसेवकों में भारी उत्साह है। कदमताल करते दिखेंगे 30 हजार स्वयंसेवक इतनी बड़ी संख्या में लोगों के जुटने के बावजूद, संघ की सबसे बड़ी पहचान यानी ‘कड़ा अनुशासन’ इस आयोजन का मुख्य आकर्षण रहेगा।

भोपाल और इसके आसपास के पांच जिलों से स्वयंसेवक अपनी पारंपरिक वेशभूषा में कार्यक्रम स्थल पर पहुंच रहे

हैं। इतने बड़े स्तर पर हो रहे इस आयोजन के लिए स्थानीय प्रशासन और संघ के कार्यकर्ताओं ने ट्रैफिक से लेकर बैठक व्यवस्था तक की चაკ-चौबंद तैयारियां की हैं। होसबोले के संबोधन पर रहेगी नजरें आगरसरस के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबोले का यह दौरा बेहद अहम माना जा रहा है। वे इस विशाल मंच से स्वयंसेवकों को संबोधित करेंगे।

‘छात्रों की गूंज’: अटकी भर्तियां, उलझी डिग्रियां और होल्ड पर भविष्य... इंदौर के मंच से छलक उठा युवाओं का दर्द

इंदौर । मध्य प्रदेश की आर्थिक और शैक्षणिक राजधानी इंदौर से इस सप्ताहांत एक ऐसा विमर्श सामने आया, जो सीधे तौर पर देश की युवा आबादी के भविष्य से जुड़ा है। ‘देश दर्पण संवाद’ की इस विशेष रिपोर्ट में हम बात कर रहे हैं युवाओं से जुड़े कार्यक्रम ‘छात्रों की गूंज’ की। इस मंच का उद्देश्य राजनीति से इतर उन लाखों छात्रों की जमीनी सच्चाइयों और मानसिक द्वंद्व को सामने लाना था, जो सालों से बंद कमरों में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं।

हालांकि सरकार द्वारा युवाओं के कौशल विकास और रोजगार सृजन के लिए कई नीतियां और योजनाएं चलाई जा रही हैं, लेकिन प्रशासनिक लेटलतीफी, कोर्ट केस और परीक्षाओं की अनियमितताओं के कारण छात्रों तक उनका वास्तविक लाभ नहीं पहुंच पा रहा है। क्या है ‘छात्रों की गूंज’ और क्यों पड़ी इसकी जरूरत? हाल के दिनों में नीट जैसी राष्ट्रीय परीक्षाओं में हुई अनियमितताओं और पेपर लीक के मामलों ने देशभर के छात्रों में एक चिंता का माहौल पैदा कर दिया है।

इसी पृष्ठभूमि में कांग्रेस ने छात्रों की समस्याओं को मंच देने के लिए ‘छात्रों की गूंज’ कार्यक्रम शुरू किया। इंदौर इस राष्ट्रव्यापी संवाद श्रृंखला का पांचवां शहर था। इससे पहले के शहरों में भी छात्रों की बड़ी भागीदारी इस बात का संकेत है कि देश का युवा अपनी शिक्षा और रोजगार को लेकर जवाबदेही चाहता है। मंच से उठीं छात्रों की आपबीती “8 साल से होल्ड का राक्षस बैठा है” इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण वह सत्र रहा, जहां छात्रों ने सीधे अपनी परेशानियां साझा कीं।

इन अनुभवों ने परीक्षा आयोजित करने वाली संस्थाओं की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े किए सपना गुर्जर राजगढ़ ने एमपीपीएससी की उलझी हुई भर्ती प्रक्रिया का दर्द साझा किया। उन्होंने बताया कि 2019 में 27% आरक्षण लागू होने के बाद, विधिक विवादों के चलते 13% पदों पर नियुक्तियां होल्ड कर दी गईं। उन्होंने भावुक होकर कहा कि पिछले 8 सालों से 10,000 पदों पर ‘होल्ड’ लगा हुआ है। सतना के एक अन्य छात्र ने बताया कि मेन्स और इंटरव्यू पास करने के बाद

भी हजारों युवा नियुक्ति के इंतजार में ‘ओवर-एज’ हो रहे हैं। याशिका दानी नर्सिंग छात्रा ने नर्सिंग परीक्षाओं में हो रही अत्यधिक देरी पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि 2020 में एडमिशन लेने वाले छात्र 2026 तक थर्ड ईयर में ही अटके हुए हैं। न समय पर परीक्षाएं हो रही हैं और न ही रिजल्ट आ रहे हैं।

राहुल गांधी का रुख- “सिस्टम की खामियां छात्रों को कर रही हताश”

इंदौर के IDA ग्राउंड पर छात्रों को संबोधित करते हुए राहुल गांधी ने मौजूदा व्यवस्था पर सवाल खड़े किए। उन्होंने कहा कि शिक्षा क्षेत्र में जो बजट 2014 से पहले 4.6% था, वह अब घटकर 2.6% रह गया है। राहुल ने आरोप लगाया कि व्यवस्था की खामियों के कारण छात्रों में वैचारिक स्वतंत्रता खत्म हो रही है और शिक्षा का व्यवसायीकरण बढ़ रहा है।

मानसिक अवसाद और बुनियादी ढांचे की चुनौतियां- कार्यक्रम में दिल्ली के सत्य निकेतन और अन्य हॉस्टल हादसों में जान गंवाने वाले 21 वर्षीय छात्र अर्पण जाज (देवास निवासी) का मुद्दा भी उठा। यह घटना देश में छात्रों के लिए सुरक्षित और सुलभ इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी को दर्शाती है। आंकड़े बताते हैं कि 100 में से मात्र 14 छात्रों को ही हॉस्टल की सुविधा मिल पाती है। इसके अलावा, भर्तियों में देरी का सीधा असर मध्यमवर्गीय परिवारों की आर्थिक स्थिति पर पड़ रहा है, जिससे युवा गंभीर मानसिक अवसाद (डिप्रेशन) का शिकार हो रहे हैं।

2029 का समीकरण और युवाओं की भूमिका

सरकारी आंकड़ों (PLFS 2025) के अनुसार, देश में 15 से 29 वर्ष के लगभग 36.74 करोड़ युवा हैं, जो कुल आबादी का 26% हैं। वर्तमान में गांवों में बेरोजगारी दर 8.3% और शहरों में 13.6% है। कुल 9.9% की यह बेरोजगारी दर स्पष्ट करती है कि यह ‘जेन-जी’ (Gen-Z) पीढ़ी आने वाले समय में एक मूक दर्शक नहीं, बल्कि एक निर्णायक मतदाता वर्ग होगी। कांग्रेस की कोशिश इसी युवा असंतोष को एक राजनीतिक दिशा देने की है।



कॉर्पोरेट जगत में छप्परफाड़ धनवर्षा

388 करोड़ के सालाना पैकेज के साथ देश के सबसे महंगे CEO बने परसिस्टेंट के संदीप कालरा
टॉप-10 की सूची में IT और मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर का दबदबा;
दूसरे नंबर पर मौजूद HCL टेक के CEO से दोगुनी है कालरा की सैलरी

भोपाल | देश दर्पण संवाद

भारत के कॉर्पोरेट इतिहास में शीर्ष अधिकारियों (CEO) के वेतन ने एक नया मुकाम हासिल किया है। वित्तीय वर्ष 2025-26 के आंकड़े स्पष्ट करते हैं कि देश की दिग्गज कंपनियां अपने शीर्ष नेतृत्व पर दिल खोलकर पैसा खर्च कर रही हैं। कॉर्पोरेट डेटाबेस 'कैपिटलाइन' (Cap-italine) द्वारा जारी नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, प्रमुख आईटी कंपनी 'परसिस्टेंट सिस्टम्स' (Persistent Systems) के सीईओ संदीप कालरा देश में सबसे अधिक वेतन पाने वाले एजीक्यूटिव बनकर उभरे हैं। उनका सालाना सैलरी पैकेज 388 करोड़ रुपये के ऐतिहासिक आंकड़े को छू गया है।

पैकेज में 162% का जबरदस्त उछाल

संदीप कालरा का यह वेतन इस समय कॉर्पोरेट जगत में सबसे बड़ी चर्चा का विषय है, क्योंकि उनके पैकेज में पिछले वर्ष की तुलना में करीब 162 प्रतिशत की भारी वृद्धि दर्ज की गई है।

जानकारों के अनुसार, इस बंपर उछाल में कंपनी द्वारा दिए गए 'स्टॉक ऑप्शंस' (ESOPs) का सबसे बड़ा योगदान है। हैशानी की बात यह है कि सूची में दूसरे पायदान पर मौजूद एचसीएल टेक के सीईओ सी. विजयकुमार की कुल सैलरी से भी संदीप कालरा का पैकेज लगभग दोगुना है।

आईटी और मैन्युफैक्चरिंग कंपनियों का दबदबा कैपिटलाइन की रिपोर्ट से एक बड़ा ट्रेंड यह भी सामने आया है कि टॉप-10 सबसे महंगे सीईओ की इस सूची में आधी से अधिक कंपनियां (50% से ज्यादा) आईटी (IT) और मैन्युफैक्चरिंग (Manufacturing) सेक्टर से ताल्लुक रखती हैं।

यह रुझान बताता है कि तकनीकी और विनिर्माण क्षेत्र में शानदार और अनुभवी नेतृत्व के लिए कंपनियां कोई भी कीमत चुकाने को तैयार हैं।

देश के टॉप-10 सबसे ज्यादा सैलरी पाने वाले दिग्गज

(स्रोत: कैपिटलाइन | सभी आंकड़े करोड़ रुपए में)

संदीप कालरा – परसिस्टेंट सिस्टम्स (388 करोड़)
सी. विजयकुमार – एचसीएल टेक
पवन मुंजाल – हीरो मोटोकॉर्फ
एस.एन. सुब्रमण्यम – एलएंडटी (L&T)
मुरली के. दिवि – दिविज लैबरेट्रीस
सलिल पारेख – इंफोसिस
नीरज कंवर – अपोलो टायर्स
एच.एम. बांगड़ – श्री सीमेंट
अंबरीश – एंजल वन
मोहित जोशी – टेक महिंद्रा

सुलगते छात्र और शुचिता की तलाश

एक तरफ इंदौर के मंच से ‘सिस्टम’ पर राहुल का तीखा वार,

तो दूसरी तरफ उज्जैन में सिंहस्थ-2028 और ‘जेन-जी’ के सरोकारों पर मंथन!

● शिवम शुक्ला

उज्जैन- मध्य प्रदेश के सियासी फलक पर इस हफ्ते दो बड़ी तस्वीरें उभरीं—एक तरफ युवाओं का छलका दर्द और व्यवस्था पर सवाल, तो दूसरी तरफ संतों के सान्निध्य में विकास और अध्यात्म का अनूठा संगम।

इस हफ्ते मध्य प्रदेश की आर्थिक, शिक्षा, अध्यापन और राजनीति के केंद्र दो बड़े आयोजनों से गुलजार रहे। ‘देश दर्पण संवाद’ के इस विशेष साप्ताहिक अंक में हम आपके लिए लेकर आए हैं इंदौर में आयोजित ‘छात्रों की गुंज’ और उज्जैन के युवा धर्म संसद से जुड़ी उन तमाम जमीनी खबरों का कच्चा-चिढ़ा, जो सीधे तौर पर आपके भविष्य, संस्कृति और सिस्टम की दशा-दिशा तय करती हैं।

आइए जानते हैं, इस हफ्ते क्या रहा सबसे बड़ा मुद्दा और किसने क्या कहा...

“सिस्टम अंधभक्त पैदा कर रहा है”:- राहुल गांधी का तल्ख प्रहार

इंदौर के IDA ग्राउंड पर आयोजित ‘छात्रों की गुंज’ के 5वें एडिशन में लगभग 20-25 हजार युवाओं का सैलाब उमड़ा। यहाँ राहुल गांधी ने ‘सिस्टम बनाम स्टूडेंट्स’

पर करीब 60 मिनट बात करते हुए तड़का लगाया कि आज का सिस्टम यह नहीं चाहता कि छात्र सवाल पूछें, इसलिए वह ‘अंधभक्त’ जैसी स्थितियां पैदा कर रहा है। उन्होंने आंकड़े पेश करते हुए कहा कि 2014 से पहले जहां बजट का 4.6% शिक्षा पर जाता था, वह अब घटकर 2.6% रह गया है, और 7.7 लाख करोड़ रुपये उद्योगपतियों (अंबानी-अडानी) के हाथ चले गए।

उज्जैन का मंथन—सिंहस्थ 2028, ‘जेन-जी’ और सनातन के सरोकार, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के तीखे तीर और ऐतिहासिक संदर्भ

उज्जैन में युवा धर्म संसद के समापन समारोह में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भगवान राम, कृष्ण और द्रोणाचार्य के प्रसंगों के जरिए शासन में जवाबदेही की बात कही।

उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के उस चर्चित बयान का उल्लेख किया जिसमें उन्होंने कहा था— “मैं 1 रुपया भेजता हूँ तो नीचे 15 पैसे ही पहुंचते हैं।”

सीएम ने तंज कसा कि तब केंद्र, राज्य और नगर स्तर पर कांग्रेस की सरकारें थीं, फिर भी यह सवाल उठा कि पैसा कहाँ गायब हो रहा है। इसके साथ ही, मुख्यमंत्री ने विक्रम उद्योगपुरी में जेके लाइफकेयर सेंटर्स की आधुनिक एपीआई मैन्युफैक्चरिंग यूनिट का उद्घाटन भी किया।

“यह कुंभ हम सबका है”:- स्वामी अवधेशानंद गिरि का संदेश

जूना अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि ने सिंहस्थ 2028 की तैयारियों के बीच कहा कि विकास सरकार का काम है और साधु-संत विकास के विरोधी नहीं हैं, बल्कि जरूरत पर वे पूरा सहयोग देने को तैयार हैं। उन्होंने ‘जेन-जी’ पीढ़ी

के बारे में कहा कि आज के युवाओं की अपनी सोच और गैजेट्स की दुनिया है, इसलिए उन्हें अलग-थलग करने के बजाय साथ लेकर चलना होगा। साथ ही, उन्होंने कहा कि सिंहस्थ में सनातनी हिंदू वर्ग के साथ मुस्लिम भाई भी योगदान देने के लिए तैयार रहें— “यह कुंभ हम सबका है।”



युवा धर्म संसद

महाकाल की नगरी में संध्र प्रमुख



RSS प्रमुख मोहन भागवत उज्जैन में आयोजित 6वीं युवा धर्म संसद के दौरान, जहाँ उन्होंने 18 सितंबर को इस तीन-दिवसीय आयोजन का विधिवत उद्घाटन किया। इस कार्यक्रम में 24 राज्यों से लगभग

1,200 युवा प्रतिभागी शामिल हुए, जिसमें संस्कृति, शिक्षा, रोजगार, तकनीक और राष्ट्र-निर्माण जैसे विषयों पर चर्चा हुई।

‘युवा धर्म संसद’ में युवाओं से संवाद और जीवन अनुशासन का मंत्र बाबा महाकाल की पवित्र नगरी उज्जैन इस समय एक बड़े वैचारिक और राष्ट्रीय विमर्श का केंद्र बनी हुई है जहा दुनिया भर से काफी सारे धर्म के ज्ञात आए है।

● प्रकाश त्रिपाठी, शिवम शुक्ला

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के

सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत अपने तीन दिवसीय मध्य प्रदेश प्रवास के तहत उज्जैन में मौजूद हैं। उनका यह दौरा केवल एक संगठनात्मक कार्यक्रम नहीं है, बल्कि यह एक ऐसे विजन का हिस्सा है जो भारत के भविष्य की दिशा तय करने के लिए, युवाओं को वैचारिक और सांस्कृतिक रूप से मजबूत करने पर केंद्रित है।

संघ प्रमुख के इस उज्जैन प्रवास का सबसे अहम पहलू युवाओं से उनका सीधा संवाद है। 18 सितंबर को गीता भवन में ‘सेवान संस्थानम्’ द्वारा आयोजित युवा धर्म संसद-2026 में डॉ. भागवत ने देशभर के 24 राज्यों से आए युवाओं को संबोधित किया। आज जब भारत दुनिया का सबसे युवा देश है, तब संघ का पूरा फोकस

इस असीम ऊर्जा को राष्ट्र निर्माण के सही मार्ग पर ले जाने पर है।

इस धर्म संसद में अपने संबोधन के दौरान डॉ. मोहन भागवत ने ‘धर्म’ की एक बहुत ही व्यावहारिक और व्यापक परिभाषा युवाओं के सामने रखी। उन्होंने स्पष्ट किया कि पश्चिमी देशों के प्रभाव में अक्सर धर्म को ‘रिलिजन’ या केवल पूजा-पद्धति मान लिया जाता है, जबकि भारतीय संदर्भ में धर्म दरअसल “जीवन का अनुशासन” है।

संघ प्रमुख ने युवाओं को मंत्र दिया कि दैनिक जीवन में कंचरा न फैलाना और ट्रैफिक नियमों का पालन करना भी उसी धर्म का हिस्सा है। उन्होंने युवाओं से अपील की कि वे धर्म के सिद्धांतों को केवल ग्रंथों तक सीमित न रखें, बल्कि उसे अपने आचरण में उतारें। मालवा और विशेषकर उज्जैन का क्षेत्र हमेशा से संघ के वैचारिक अनुष्ठान

और सामाजिक कार्यों का एक प्रमुख केंद्र रहा है। ऐसे में बाबा महाकाल के आशीर्वाद की छांव में हो रहा यह युवा विमर्श और भी प्रासंगिक हो जाता है।

संघ प्रमुख का यह प्रवास इस बात का स्पष्ट संकेत है कि आरएसएस अपनी स्थापना की शताब्दी की ओर कदम बढ़ाते हुए, अब आधुनिक पीढ़ी (Gen-Z) को भारतीय मूल्यों के साथ आगे लाने और उन्हें समाज में नेतृत्व करने के लिए तैयार कर रहा है।

उज्जैन की धरती से चल रहा यह वैचारिक मंथन केवल मध्य प्रदेश तक सीमित नहीं है। यहाँ से निकला संदेश पूरे देश के युवाओं के लिए एक स्पष्ट आह्वान है—कि भारत को परम वैभव पर ले जाने और विश्व पटल पर सशक्त बनाने का मार्ग युवाओं के अनुशासन, उनके चरित्र और उनकी अटूट राष्ट्रभक्ति से होकर ही गुजरता है।

भारतीय वायु सेना ने

आसमान में दिखाया करतब



● मयंक आनंद

भारतीय वायु सेना की सूर्यकिरण एरोबैटिक टीम (एसकेएटी) ने 19 और 20 सितंबर 2026 को पहली बार मेरठ के आसमान में अपने शानदार हवाई करतब दिखाकर दर्शकों का मन मोह लिया। दो दिन तक चले इस प्रदर्शन को देखने के लिए एक लाख से अधिक लोग पहुंचे। इनमें बड़ी संख्या में विद्यार्थी, राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) के कैडेट और राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के स्वयंसेवक शामिल थे। इस आयोजन की सबसे खास बात यह रही कि सूर्यकिरण एरोबैटिक टीम के तीन सदस्य मेरठ से ही हैं।

इनमें हवाई करतब दिखाने वाले दो पायलट भी शामिल हैं। रक्षा राज्य मंत्री श्री संजय सेठ ने 20 सितंबर, 2026 को सूर्यकिरण एरोबैटिक टीम के हवाई प्रदर्शन को देखा। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर एक पोस्ट के माध्यम से इस आयोजन की सराहना की। रक्षा राज्य मंत्री ने इस कार्यक्रम को अनुशासन, सटीकता, टीम भावना और पेशेवर दक्षता का बेहतरीन समन्वय बताया तथा इसे भारतीय वायु सेना की शानदार क्षमताओं का प्रमाण कहा।

उन्होंने सूर्यकिरण एरोबैटिक टीम के साहस और समर्पण की सराहना की। एसकेएटी ने अपनी 30 वर्ष की यात्रा के दौरान अब तक भारत और विदेशों में 800 से अधिक हवाई प्रदर्शन किए हैं। प्रदर्शन के पहले दिन उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर एक पोस्ट के माध्यम से सूर्यकिरण एरोबैटिक टीम के पायलटों की सटीकता और साहस की सराहना की।

उन्होंने कहा कि पायलटों ने आसमान को तिरंगे के रंगों से सजाते हुए अद्भुत सटीकता एवं साहस का प्रदर्शन किया। मुख्यमंत्री ने इस अवसर को उत्तर प्रदेश और पूरे देश के लिए गर्व तथा प्रेरणा का क्षण बताया।

मेरठ में इस हवाई प्रदर्शन को देखने वाले अन्य गणमान्य व्यक्तियों में राज्यसभा सांसद डॉ. लक्ष्मीकांत बाजपेयी, उत्तर प्रदेश के राज्य मंत्री श्री सोमेंद्र तोनर तथा विधान परिषद सदस्य श्री अश्विनी त्यागी और श्री धर्मेन्द्र भारद्वाज शामिल थे।

मेरठ हवाई प्रदर्शन के बारे में जानकारी

सूर्यकिरण एरोबैटिक टीम ने 2026 के प्रशिक्षण सत्र के सफल समापन के तुरंत बाद मेरठ के नागरिकों के सामने अपने नए विन्यास का शानदार प्रदर्शन किया।

हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) द्वारा भारत में लाइसेंस के तहत निर्मित नौ विशेष लाल

और सफेद रंग के हॉक एमके-132 विमानों के साथ टीम ने शानदार हवाई करतब प्रस्तुत किए, जिन्हें देखकर दर्शक मंत्रमुग्ध हो गए।

शानदार लूप और रोमांचक बैरल रोल से लेकर उल्टी उड़ान तथा प्रसिद्ध ‘डीएनए’ करतब तक, टीम की हर प्रस्तुति में सटीकता, कौशल व उत्कृष्ट तालमेल का प्रदर्शन देखने को मिला।

ये विमान एक-दूसरे से बेहद कम दूरी पर, पांच मीटर से भी कम फासले पर उड़ान भरते हैं। ऐसे में प्रत्येक हवाई करतब उत्कृष्ट उड़ान कौशल, अनुशासन और विन्यास में शामिल सदस्यों के बीच अटूट विश्वास का प्रमाण होता है।

इस प्रदर्शन की एक और खास विशेषता हॉक एमके-132 विमानों में देश में किया गया महत्वपूर्ण बदलाव है। इसके तहत विमानों में ऐसे धुआं छोड़ने वाले उपकरण लगाए गए हैं, जिनसे रंगीन धुआं निकलता है।

भारतीय वायु सेना के नाशिक स्थित बेस रिपेयर डिपो में किये गए इस बदलाव के कारण ये विमान आसमान में राष्ट्रीय ध्वज के तीन रंग अर्थात केसरिया, सफेद और हरा बिखेरने में सक्षम हैं।

सूर्यकिरण एरोबैटिक टीम के बारे में जानकारी

वर्ष 1996 में गठित सूर्यकिरण एरोबैटिक टीम- एसकेएटी एशिया की नौ विमानों वाली एकमात्र एरोबैटिक टीम है और दुनिया की चुनिंदा एरोबैटिक दलों में शामिल है।

देशभर में 800 से अधिक हवाई प्रदर्शनों के माध्यम से दर्शकों का दिल जीतने के साथ-साथ चीन, श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड, सिंगापुर, संयुक्त अरब अमीरात और दुबई में अंतरराष्ट्रीय एयर शो के दौरान भारतीय वायु सेना की पेशेवर क्षमता का प्रदर्शन कर चुकी सूर्यकिरण अब केवल एक एरोबैटिक टीम नहीं रह गई है।

‘भारतीय वायु सेना के दूत’ के रूप में सूर्यकिरण जहां भी प्रदर्शन करती है, वहां भारतीय वायु सेना की भावना और उसकी कार्यशैली को प्रस्तुत करती है। टीम अपनी उत्कृष्ट उपलब्धियों की गौरवशाली विरासत को आगे बढ़ाने के साथ-साथ युवाओं को रक्षा सेवाओं में करियर बनाने के लिए प्रेरित करती है।

इसके प्रदर्शन युवाओं को भारतीय वायु सेना की पहचान माने जाने वाले पेशेवर कौशल, सटीकता, अनुशासन और समर्पण को करीब से देखने का अवसर भी प्रदान करते हैं।



प्रधान संपादक असित पाठक की कलम से...



इच्छाशक्ति (Will Power) को मजबूत बनाइए:-

छोटी-छोटी बातों में दृढ़ संकल्प का अभ्यास करने से इच्छाशक्ति विकसित होती है। इच्छाशक्ति आध्यात्मिक विकास का महत्वपूर्ण साधन है।

प्रथम अंक से दूसरे अंक तक – आवश्यकताओं व संकल्पों की कसौटी पर हमारा सफर !

प्रथम अंक में मैंने इस समाचार पत्र की आवश्यकता और इसके उद्देश्यों एवं संकल्पों के बारे में विस्तार से चर्चा की थी।

अब आइए, यह देखते हैं कि प्रथम अंक से ही हमने उन आवश्यकताओं और संकल्पों को अपनी पत्रकारिता में किस प्रकार उतारने का प्रयास किया है। हमने जो कहा था, उसे कितना और किस रूप में पूरा किया—इसे बिंदुवार समझते हैं।

सर्वप्रथम, बात उन आवश्यकताओं की, जिनके कारण 'देश दर्पण संवाद' की आवश्यकता महसूस हुई—

1. भारत की प्राचीन संस्कृति की सुगंध को देश और दुनिया तक पहुँचाना। हमने प्रथम अंक में कहा था कि भारत की हजारों वर्षों पुरानी संस्कृति, परंपरा और ज्ञान की सुगंध को संपूर्ण भारत और विश्व तक पहुँचाने की आवश्यकता है। इसी संकल्प की एक छोटी-सी शुरुआत हमने अपने समाचार पत्र के पृष्ठों के शीर्षकों से की है। हमारे विभिन्न पृष्ठों के नाम संस्कृत में रखे गए हैं—'स्वनगरम्', 'स्वदेशम्', 'सम्पादकीयम्', 'अतिथि देवो भवः', 'क्रीडा-स्पर्धा वार्ता', 'विश्वस्य दर्शनम्', 'व्यापार-व्यवसायः' और इस अंक में हम दो नए पृष्ठ 'स्त्रीरत्नम्' और 'मनोरंजनम्' भी लेकर आ रहे हैं। हमारा उद्देश्य केवल संस्कृत शब्दों का प्रयोग करना नहीं, बल्कि पाठकों को भारतीय भाषाएँ और सांस्कृतिक विरासत से सहज रूप से जोड़ना है।

2. भारत के गौरवशाली इतिहास और सभ्यता का संदेश नई पीढ़ी तक पहुँचाना। हमने कहा था कि भारत के गौरवशाली इतिहास, संस्कृति और सभ्यता से आज के युवाओं को परिचित करना आवश्यक है। इसी उद्देश्य से प्रथम और द्वितीय अंक में प्रथम पूज्य आराध्य देव भगवान श्री गणेश तथा हनुमान जी से प्रेरित हनुमान अंश संबंधित विशेष लेखों को स्थान दिया गया है। इनके माध्यम से हमारी प्राचीन सांस्कृतिक परंपराओं, आस्था और सभ्यता की निरंतरता पर विचार करने का अवसर मिलता है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त प्राचीन मूर्तियाँ, मंदिर, शिलालेख और पुरातात्विक अवशेष हमारी सभ्यता की प्राचीनता की ओर संकेत करते हैं। इस गौरवशाली विरासत को समझना और नई पीढ़ी तक पहुँचाना हमारी पत्रकारिता के महत्वपूर्ण उद्देश्यों में से एक है।

3. नए भारत के स्वर्णिम भविष्य

का विश्वास जगाना। हमने प्रथम अंक में कहा था कि भारत के नागरिकों, विशेषकर युवा पीढ़ी को यह बताना आवश्यक है कि भारत के भविष्य में अपार संभावनाएँ हैं। इसी दृष्टि से हमने भारत की आर्थिक विकास दर से संबंधित समाचारों और विश्लेषण को स्थान दिया।

7.8 प्रतिशत की जीडीपी वृद्धि दर जैसे आंकड़े भारत की आर्थिक गति को समझने का एक महत्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करते हैं। हमारा उद्देश्य केवल आंकड़े बताना नहीं, बल्कि उनके पीछे छिपी संभावनाओं को समझाना है—कि भारत किस दिशा में आगे बढ़ रहा है और आने वाले समय में उसकी भूमिका क्या हो सकती है।

4. युवा, महिला और हर आयु वर्ग की आकांक्षाओं को प्रतिनिधित्व देना। हमने संकल्प लिया था कि समाचार पत्र में युवा वर्ग, महिला वर्ग तथा समाज के विभिन्न आयु और कार्यक्षेत्रों से जुड़े लोगों की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं और विचारों को उचित स्थान दिया जाएगा। इस दिशा में इस अंक में गणेश चतुर्थी पर्व पर विशेष आलेख, श्रीमती रत्ना का विचारपरक लेख, युवा उद्यमी श्री तनय का आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर विचारशील लेख तथा प्रगतिशील उद्यमी श्री प्रदीप सैनी जी का GeM पर विशेष लेख प्रकाशित किया गया है। विशेष रूप से GeM से संबंधित लेख युवाओं और नए उद्यमियों के लिए उपयोगी हैं, क्योंकि यह उन्हें सरकारी खरीद व्यवस्था और सरकारी कार्यों में भागीदारी के अवसरों को समझने की दिशा में महत्वपूर्ण जानकारी देता है। इसी प्रकार भोपाल की रुही राय पर श्री प्रकाश त्रिपाठी की विशेष रिपोर्ट न केवल रोचक है, बल्कि प्रेरणादायक भी है। इस आलेख में बताया गया है कि कैसे पहले स्वास्थ्य और फिटनेस के क्षेत्र में काम करने वाली रुही ने कोविड महामारी के दौरान एकांत को अपनी ताकत बनाया और टैरो कार्ड व अंक ज्योतिष (Numerology) की नई विधा सीखी। आज वे अपनी राह बदलकर दुनियाभर में 'द डिवाइन रुही' के नाम से एक मशहूर टैरो कार्ड रीडर व न्यूमेरोलॉजिस्ट बन चुकी हैं।

5. भारत की आर्थिक शक्ति और पुनः वैश्विक प्रभाव की यात्रा को समझना। हमने कहा था कि भारत के नागरिकों को यह समझने की आवश्यकता है कि भारत की आर्थिक शक्ति और समृद्धि का इतिहास केवल आधुनिक काल तक सीमित नहीं है, बल्कि इसकी जड़ें अत्यंत प्राचीन हैं। इसी संदर्भ में हमने आर्थिक विकास, रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता और मध्य प्रदेश में बड़े विदेशी निवेश जैसे विषयों से संबंधित समाचारों को स्थान दिया है।

इन घटनाक्रमों को एक साथ देखने पर यह समझने में मदद मिलती है कि भारत अपनी आर्थिक क्षमता को मजबूत करने और वैश्विक स्तर पर अपनी भूमिका को बढ़ाने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

6. युवा और कार्यशील वर्ग को विकास यात्रा का एहसास कराना:- हमने कहा था कि युवा और कार्यशील वर्ग को यह महसूस होना चाहिए कि भारत विकास की एक महत्वपूर्ण यात्रा पर आगे बढ़ रहा है। आजादी के बाद भारत ने अनेक क्षेत्रों में निरंतर प्रगति की है।

उद्योग, व्यापार, विज्ञान, तकनीक, रक्षा, अंतरिक्ष और बुनियादी ढाँचे से लेकर चंद्रयान मिशन तक की यात्रा भारत की वैज्ञानिक और तकनीकी क्षमता की कहानी कहती है। इसी क्रम में द्वितीय अंक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस के अवसर पर विशेष आलेख प्रकाशित किया गया है, जिसमें वर्तमान भारत की विकास यात्रा और उसके नेतृत्व से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई है।

7. ब्लैकमेलिंग की पत्रकारिता से स्पष्ट दूरी। हमने प्रथम अंक में स्पष्ट संकल्प लिया था कि हम ब्लैकमेलिंग की पत्रकारिता नहीं करेंगे। हमारा मानना है कि पत्रकारिता का उद्देश्य किसी व्यक्ति, संस्था या व्यवस्था पर दबाव बनाकर निजी लाभ प्राप्त करना नहीं, बल्कि समाज के सामने तथ्य और वास्तविकता रखना है। हमें विश्वास है कि प्रथम दो अंकों में हमारी पत्रकारिता में ऐसी प्रवृत्ति की कोई झलक आपको दिखाई नहीं दी होगी। आगे भी हम इस मूल सिद्धांत से समझौता नहीं करेंगे।

8. भय, पक्षपात और निजी स्वार्थ से मुक्त पत्रकारिता। हमने यह भी संकल्प लिया था कि हमारी पत्रकारिता न भय से प्रभावित होगी, न पक्षपात से और न ही किसी निजी स्वार्थ से। पहले अंक में भी यह भावना नहीं थी, दूसरे अंक में भी नहीं है और आने वाले अंकों में भी हम इसी सिद्धांत को बनाए रखेंगे। हमारा पक्ष किसी व्यक्ति या संस्था का नहीं, बल्कि सत्य, समाज और देशहित का होना चाहिए—यही हमारी पत्रकारिता का मूल आधार है।

9. प्रिंट से डिजिटल तक—एक व्यापक उपस्थिति। हमने प्रथम अंक में ही यह स्पष्ट किया था कि 'देश दर्पण संवाद' केवल एक प्रिंट समाचार पत्र बनकर सीमित नहीं रहेगा। हम अपनी वेबसाइट के माध्यम से डिजिटल उपस्थिति पहले ही बना चुके हैं और शुरुआती दौर में ही हजारों की व्यूअरशिप प्राप्त कर चुके हैं। इसके साथ ही Instagram, YouTube, Facebook और X सहित विभिन्न डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हमारी

उपस्थिति को और व्यापक बनाने की तैयारी चल रही है। हमारा प्रयास है कि आने वाले एक-दो अंकों में हमारी डिजिटल उपस्थिति और अधिक व्यवस्थित एवं प्रभावशाली रूप में दिखाई दे।

प्रथम अंक में हमने जो संकल्प लिए थे, उन पर हम दृढ़ प्रतिज्ञ हैं व रहेगे। प्रत्येक अंक के साथ उन्हें जमीन पर उतारने की हमारी प्रतिबद्धता और मजबूत हो रही है।

और अब—मेरा व्यक्तिगत संकल्प प्रधान संपादक के रूप में मैंने प्रथम अंक में एक व्यक्तिगत संकल्प लिया था। आज उसी संकल्प को एक बार फिर दोहराना चाहता हूँ। मेरा व्यक्तिगत संकल्प है कि मैं देश के युवाओं में आंतरिक शक्ति, साहस, आत्मविश्वास, धैर्य और संकटों का सामना करने की क्षमता को और विकसित करने की दिशा में निरंतर कार्य करूँ। भारतीय युवाओं ने अपनी योग्यता, प्रतिभा, क्षमता और कौशल से आज विश्व के अनेक क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाई है।

लेकिन मेरा विश्वास है कि किसी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति केवल उसकी युवा प्रतिभा में नहीं, बल्कि उस प्रतिभा के साथ जुड़े चरित्र, आत्मविश्वास, अनुशासन और आंतरिक शक्ति में होती है। इसीलिए हमारा प्रयास होगा कि हर अंक में एक ऐसे जुझारु युवा की कहानी आपके सामने रखें, जिसने स्वयं पर, अपने परिवार पर, समाज पर या देश पर आए किसी संकट के समय असाधारण आंतरिक शक्ति, दृढ़ विश्वास, साहस और आत्मविश्वास का परिचय दिया हो। इसी अंक में श्री तनय द्वारा अपनी लेखनी से एक जुझारु लड़की का लेख लिखा गया है जिसे पढ़कर मैं खुद भावुक भी हुआ और अत्यंत प्रभावित भी।

ऐसी कहानी, जिसमें परिस्थितियाँ उसके विरुद्ध थीं, लेकिन उसने परिस्थितियों के आगे हार मानने के बजाय अपनी सूझबूझ, परिश्रम और साहस से उनका सामना किया और अंततः सफलता प्राप्त की। यही 'देश दर्पण संवाद' का संकल्प है।

यही हमारी यात्रा है। और इस यात्रा में आपका साथ ही हमारी सबसे बड़ी शक्ति है।

आपका अपना, प्रधान संपादक असित पाठक

विशेष लेख

अरुणिमा सिन्हा – वह लड़की जिसने हार मानने से इनकार कर दिया



तनय की दृष्टि से...

उत्तर प्रदेश की एक युवा खिलाड़ी अरुणिमा सिन्हा के जीवन में सब कुछ सामान्य चल रहा था। वह राष्ट्रीय स्तर की वॉलीबॉल खिलाड़ी थीं और उनके सामने एक उज्ज्वल भविष्य था। लेकिन एक रात उनकी जिंदगी अचानक बदल गई। वह ट्रेन से यात्रा कर रही थीं। रास्ते में कुछ लुटेरों ने उनका सामान छीनने की कोशिश की। अरुणिमा ने विरोध किया।

इसकेबाद जोड़ूआ, वह भयावह था। उन्हें चलती ट्रेन से बाहर फेंक दिया गया। वह रेलवे ट्रैक के पास गिर गईं। एक ट्रेन उनके ऊपर से गुजर गई। उनका पैर बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। वह वहाँ पड़ी रहीं। घंटों तक। अंधेरे में। दर्द में। और आसपास से गुजरती ट्रेनों की आवाज सुनती रहीं।

लेकिन उस रात उन्हें यह नहीं पता था कि उनकी जिंदगी का अगला अध्याय दुनिया को प्रेरित करने वाला है। अस्पताल में एक और झटका उन्हें अस्पताल ले जाया गया। डॉक्टरों ने उनकी जान बचाने के लिए उनका पैर काटना पड़ा। एक युवा खिलाड़ी के लिए यह किसी दुःस्वप्न से कम नहीं था।

वह सोच सकती थीं—

“अब मेरा जीवन खत्म हो गया।” लेकिन अरुणिमा ने ऐसा नहीं सोचा। उनके मन में एक बिल्कुल अलग विचार आया। उन्होंने तय किया कि वह दुनिया को साबित करेगी कि एक पैर खोने से जिंदगी खत्म नहीं होती।

और फिर उन्होंने एक ऐसा लक्ष्य चुना, जिसे सुनकर बहुत से लोग शायद असंभव मानते। उन्होंने कहा कि वह—

माउंट एवरेस्ट पर चढ़ेगी।

“तुम ऐसा नहीं कर सकती” लोगों ने उन्हें समझाया। किसी ने कहा— “तुम्हारा एक पैर नहीं है।” किसी ने कहा— “पहाड़ पर चढ़ना तो दूर, सामान्य जीवन जीना भी कठिन होगा।” लेकिन अरुणिमा ने इन बातों को अपने सपने के रास्ते की दीवार नहीं बनने दिया। उन्होंने कृत्रिम पैर लगावाया और पर्वतारोहण का प्रशिक्षण शुरू किया। सोचिए— एक ऐसी लड़की जिसने अभी-अभी अपना पैर खोया था, अब फीले पहाड़ों पर चढ़ने की तैयारी कर रही थी। प्रशिक्षण आसान नहीं था। कृत्रिम पैर के साथ चलना कठिन था। पहाड़ पर चढ़ना उससे भी कठिन। कई बार शरीर जवाब देता था।

विचार लेख



गणेश उत्सव श्री वरद गणेश जन्मोत्सव

पंडित रविशंकर शास्त्री

(गणेश चतुर्थी) हिंदू धर्म के सबसे बड़े और सबसे जीवंत त्योहारों में से एक है, जो भगवान गणेश के पुनर्जन्म और पृथ्वी पर उनके अग्रमन के उत्सव के रूप में मनाया जाता है। - **भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी से शुरु होकर यह उत्सव अनंत चतुर्दशी तक पूरे 10 दिनों चलता है।**

- **इस पावन उत्सव का धार्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर अत्यंत गहरा महत्व है।**

- **ततो भक्त्या सम्पूज्य देवदेवं मोदकप्रियम् त्रिष्टाप्य च मन्त्रेण स्थापयेत् प्रयत शुचिः॥**

धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व
मान्यता है कि इन 10 दिनों के दौरान भगवान गणेश साक्षात् पृथ्वी पर आकर अपने भक्तों के घरों में निवास करते हैं और उनके जीवन के सभी दुखों, विघ्नों (बाधाओं) और नकारात्मक ऊर्जा को दूर करते हैं।

जीवन में कुछ नया कुछ अच्छा करने के प्रतीक गणेश जी बुद्धि, समृद्धि और सौभाग्य के देवता हैं। गणेश उत्सव का समय किसी भी नए कार्य, व्यापार या ज्ञान की शुरुआत के लिए सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

गणेश विसर्जन के समय श्रद्धा और पवित्रता का विशेष ध्यान रखना चाहिए, क्योंकि यह भगवान गणेश की विदाई का अत्यंत भावुक क्षण होता है।

कई बार दर्द असहनीय होता था। लेकिन हर बार वह खुद से कहती थीं— “मुझे रुकना नहीं है।” एवरेस्ट की ओर साल 2013 में वह माउंट एवरेस्ट अभियान पर निकलीं। ऊँचाई बढ़ती गई। हवा पतली होती गई। तापमान गिरता गया। हर कदम कठिन होता गया। लेकिन सबसे बड़ी लड़ाई पहाड़ के साथ नहीं थी। सबसे बड़ी लड़ाई थी— अपने मन के साथ। वह जानती थीं कि एक छोटी-सी गलती भी जानलेवा हो सकती है। फिर भी वह आगे बढ़ती रहीं। आखिरकार वह क्षण आया।

उन्होंने दुनिया की सबसे ऊँची चोटी— माउंट एवरेस्ट के शिखर पर कदम रखा। 21 मई 2013 को अरुणिमा सिन्हा ने इतिहास रच दिया। वह माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली पहली महिला amputee (पैर खो चुकी महिला) बनीं। लेकिन कहानी यहीं खत्म नहीं हुई शिखर पर पहुँचने के बाद भी अरुणिमा रुकी नहीं।

उन्होंने दुनिया की अन्य ऊँची चोटियों पर चढ़ने का अभियान जारी रखा। उनका उद्देश्य केवल अपना रिकॉर्ड बनाना नहीं था। वह लोगों को यह संदेश देना चाहती थीं कि— शारीरिक कमी और मानसिक हार—दो अलग-अलग चीजें हैं। शरीर की कोई सीमा हो सकती है। लेकिन मनुष्य अपने लक्ष्य के प्रति कितना दृढ़ रहेगा, यह उसके हाथ में है। अरुणिमा की कहानी से सबसे बड़ा सबक हम अक्सर अपनी समस्याओं को देखकर कहते हैं— “मेरे पास यह नहीं है।” पैसा नहीं है। संसाधन नहीं हैं। समय नहीं है।

सही अवसर नहीं है। समर्थन नहीं है लेकिन अरुणिमा की कहानी हमें एक दूसरा प्रश्न पूछने के लिए मजबूर करती है— “मेरे पास जो है, मैं उससे क्या कर सकता हूँ?”

उन्होंने अपना एक पैर खो दिया था। लेकिन उन्होंने अपना साहस नहीं खोया। उन्होंने अपना लक्ष्य नहीं खोया। और सबसे महत्वपूर्ण— उन्होंने अपने बारे में लोगों की सीमित धारणाओं को स्वीकार नहीं किया।

इसलिए उनकी कहानी का सार केवल यह नहीं है कि उन्होंने एवरेस्ट चढ़ लिया। सच्ची उपलब्धि उससे पहले हो चुकी थी।

वह उस दिन हुई थी जब अस्पताल के बिस्तर पर, अपनी जिंदगी के सबसे कठिन समय में, उन्होंने फैसला किया था— “मैं अपनी परिस्थितियों से अपनी पहचान तय नहीं होने दूँगी।” और शायद यही किसी भी युवा के लिए सबसे शक्तिशाली संदेश है: परिस्थितियाँ आपको रोक सकती हैं, लेकिन उन्हें आपकी मंजिल तय करने का अधिकार नहीं है।

स्रोत: अरुणिमा सिन्हा की प्रकाशित जीवन-कथा और उनके एवरेस्ट अभियान से संबंधित सार्वजनिक वितरणों पर आधारित।

विसर्जन के दौरान अनजाने में होने वाली गलतियों से बचने के लिए हमें निम्नलिखित बातें ध्यान रखनी चाहिए। अंधेरे में विसर्जन न करें: गणेश विसर्जन हमेशा सूर्यास्त से पहले (दिन के उजाले में) कर लेना चाहिए। रात के समय या अंधेरे में विसर्जन करना धार्मिक रूप से वर्जित माना गया है।

सूनी गोद विदाई न दें: गणेश जी को कभी भी खाली हाथ विदा न करें। विसर्जन से पहले उनकी पोटली में भोग (जैसे मोदक, लड्डू) और सुगन्धित सामग्रियाँ अवश्य बांध के विसर्जन करें मूर्ति को फेंके नहीं:

विसर्जन करते समय मूर्ति को पानी में ऊपर से फेंकना बहुत बड़ा पाप माना जाता है। मूर्ति को पूरे आदर के साथ पानी के भीतर ले जाकर धीरे से विसर्जित करें।

नशे और अभद्र व्यवहार से बचें: विसर्जन यात्रा में चमकीले गुलाल उड़ाने, अत्यधिक शोर करने या नशा करके अभद्र डांस करने से बचना चाहिए। यह एक पवित्र विदाई है, इसे हड़दंग न बनाएं। प्राकृतिक जल स्रोतों को प्रदूषित न करें: यदि आपकी मूर्ति प्लास्टर ऑफ पेरिस (POP) या रसायनों से बनी है, तो उसे मुख्य नदी या समुद्र में विसर्जित न करें। इससे जलीय जीवों को नुकसान होता है।

बुराइयों का विसर्जन :

गणेश विसर्जन में हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारे अंदर जो भी बुराइयाँ हैं जिनसे हमारा पतन हो रहा है हमारा लोभ हमारा क्रोध , हमारी कामवासाना जिसकी वजह से हम अनेक संकटों में पड़ जाते हैं भगवान गणेश इन सभी वासनाओं को शांत करें और हमें समस्त संकटों से बचाए।

विचार लेख

GeM के 10 साल — भाग 2 : सरकारी बाजार के दरवाजे खुले, लेकिन छोटे कारोबारी के लिए रास्ता कितना आसान?

● प्रदीप सैनी

पिछली कड़ी में हमने देखा कि दस वर्षों में Government e-Marketplace यानी GeM ने सरकारी खरीद को फाइलों और पारंपरिक टेंडर प्रक्रिया से निकालकर एक बड़े डिजिटल बाजार में बदल दिया। उस लेख के अंत में सवाल था— इस नए बाजार में छोटे शहरों के युवा, स्टार्टअप और नए उद्यमी अपनी जगह कैसे बना रहे हैं?

इसका जवाब केवल “ऑनलाइन टेंडर” में नहीं, बल्कि GeM के साथ विकसित हुए पूरे support ecosystem में छिपा है।

नए कारोबार के लिए Startup Runway
Startup Runway 2.0 स्टार्टअप को अपने innovative products और services सरकारी खरीदारों के सामने प्रदर्शित करने के लिए अलग मंच देता है। DPIIT से मान्यता

प्राप्त स्टार्टअप को निर्धारित परिस्थितियों में EMD, prior turnover और prior experience जैसी शर्तों में छूट मिल सकती है। हालांकि इसका अर्थ गुणवत्ता के मानकों में छूट नहीं है—technical और quality requirements पूरी करना जरूरी रहता है।

MSME, महिला और ग्रामीण उद्यमियों के लिए अलग रास्ते

SWAYAM का उद्देश्य startups, women entrepreneurs, MSEs और SHGs की सरकारी खरीद में भागीदारी बढ़ाना है। Womaniya महिला उद्यमियों और महिला स्वयं सहायता समूहों के उत्पादों को सरकारी खरीदारों तक पहुंचाने पर केंद्रित है, जबकि SARAS Collection ग्रामीण SHGs के उत्पादों को सरकारी बाजार से जोड़ता है। GeM ने स्थानीय स्तर पर registration, catalogue creation, train-

ing और grievance assistance के लिए Suvidha Kendras की पहल भी शुरू की है।

ऑर्डर मिला तो पूंजी कहाँ से आएगी?

यहीं GeM Sahay उपयोगी होता है। पात्र proprietorship sellers को GeM पर मिले सरकारी order के आधार पर collateral-free working capital finance प्राप्त करने का डिजिटल विकल्प उपलब्ध है। इसका उद्देश्य उस cash-flow gap को कम करना है जो ऑर्डर मिलने और उसकी सप्लाई पूरी करने के बीच आता है।

TReDS क्या है और GeM से कैसे अलग है?

TReDS, GeM की योजना नहीं है। यह RBI द्वारा नियमन किया जाने वाला अलग electronic platform है, जहां MSME के approved trade receivables को financiers के माध्यम से discount करकर भुगतान की

तारीख से पहले liquidity प्राप्त की जा सकती है। RBI के अनुसार TReDS transactions MSME seller के लिए without recourse होते हैं। इन व्यवस्थाओं को साथ रखकर देखें तो सरकारी खरीद की तस्वीर केवल “टेंडर कौन जीता?” तक सीमित नहीं रहती। असली प्रश्न है— छोटा उद्यमी बाजार में प्रवेश कैसे करे, ऑर्डर पूरा करने के लिए पैसा कहाँ से लाए और कारोबार बढ़ाने के लिए व्यवस्था का उपयोग कैसे करे।

लेकिन कहानी यहीं खत्म नहीं होती।

ऑर्डर मिल गया, सामान भी पहुंच गया—अब पैसा कब मिलेगा? Buyer ने acceptance में देरी कर दी तो क्या होगा? CRAC क्या है? Payment अटक जाए तो seller के पास क्या विकल्प हैं?

अगली कड़ी में— “ऑर्डर पूरा... लेकिन भुगतान कब?”

GeM में Delivery से CRAC और Payment तक की पूरी व्यवस्था—और छोटे Seller के लिए सबसे जरूरी नियम।



बुनियादी ढांचा: नए भारत की नई जीवन रेखा

किसी भी राष्ट्र के विकास की रीढ़ उसका बुनियादी ढांचा होता है। पिछले एक दशक में भारत ने इंफ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में जो छलांग लगाई है, वह दुनिया के विकसित देशों के लिए भी एक केस स्टडी बन चुकी है। एक समय था जब देश में सड़कों का निर्माण कघुए की चाल से होता था, लेकिन आज भारत में प्रतिदिन दर्जनों किलोमीटर नए हाईवे बन रहे हैं। 'भारतमाला' और 'सागरमाला' जैसी महत्वाकांक्षी परियोजनाओं ने देश के हर कोने को एक-दूसरे से जोड़ दिया है।

भारतीय रेलवे, जो कभी सिर्फ एक पारंपरिक यातायात का साधन मानी जाती थी, आज 'वंदे भारत' और 'नमो भारत' (रेपिड रेल) जैसी विश्वस्तरीय ट्रेनों के साथ एक नए युग में प्रवेश कर चुकी है। रेलवे स्टेशनों का 'अमृत भारत स्टेशन योजना' के तहत पुनर्विकास किया जा रहा है, जिससे वे विश्वस्तरीय एयरपोर्ट्स जैसी सुविधाएं दे रहे हैं।

वहीं, हवाई चप्पल पहनने वाले आम नागरिक को हवाई जहाज की यात्रा कराने का जो सपना प्रधानमंत्री ने 'उड़ान' (UDAN) योजना के जरिए देखा था, वह आज टियर-2 और टियर-3 शहरों में नए एयरपोर्ट्स के निर्माण के साथ जमीनी हकीकत बन चुका है। पूर्वोत्तर भारत, जो दशकों तक मुख्यधारा के विकास से कटा हुआ था, आज ब्रॉडगेज रेलवे लाइन और नए हवाई मार्गों से सीधे दिल्ली से जुड़ गया है। यह सिर्फ पथरों और कंक्रीट का विकास नहीं है, बल्कि यह देश की धमनियों में दौड़ता विकास का वह नया रक्त है जो अर्थव्यवस्था को गति दे रहा है।

नारी शक्ति का वंदन: चौकै-चूल्हे से लेकर फाइटर जेट तक प्रधानमंत्री मोदी का स्पष्ट मानना है कि भारत का विकास तब तक अधूरा है, जब तक देश की आधी आबादी यानी हमारी मातृशक्ति इसका नेतृत्व न करे। मोदी सरकार ने 'महिला विकास' से आगे बढ़कर 'महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास' (Women-led Development) पर जोर दिया है। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान ने समाज की सोच को बदलने का काम किया है।

आज 'मुद्रा योजना' के तहत दिए गए करोड़ों के ऋणों में से 70 प्रतिशत से अधिक की लाभार्थी महिलाएं हैं, जो अब सिर्फ नौकरी मांगने वाली नहीं, बल्कि नौकरी देने वाली बन रही हैं। गांवों में 'लखपति दीदी' योजना के जरिए स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त किया जा रहा है। संसद और विधानसभाओं में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने वाला ऐतिहासिक 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' इसी सरकार की दृढ़ इच्छाशक्ति का परिणाम है, जो दशकों से ठंडे बस्ते में पड़ा था। आज भारत की बेटियां सिर्फ स्कूलों में टॉप नहीं कर रही हैं, बल्कि सेना में स्थायी कमीशन प्राप्त कर लड़ाकू

विमान उड़ा रही हैं और सीमाओं की रक्षा कर रही हैं।

सांस्कृतिक पुनर्जागरण: विरासत का सम्मान और विकास का संगम
एक राष्ट्र अपनी जड़ों से कटकर कभी महान नहीं बन सकता। प्रधानमंत्री मोदी ने देश को 'विकास भी और विरासत भी' का नया मंत्र दिया है। अयोध्या में रामलला के भव्य मंदिर का निर्माण सिर्फ एक ईंट-पत्थर का ढांचा नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक चेतना का पुनर्जागरण है। इसके साथ ही, काशी विश्वनाथ धाम का कायाकल्प, उज्जैन में भव्य 'श्री महाकाल महालोक' का निर्माण, और केदारनाथ व बद्रीनाथ का पुनर्निर्माण इस बात का प्रतीक है कि भारत अब अपनी सांस्कृतिक पहचान पर गर्व करना सीख गया है।

लंबे समय तक भारतीय राजनीति में अपनी संस्कृति और धर्म को लेकर एक अजीब सी हीन भावना थोपी गई थी, लेकिन आज देश का प्रधानसेवक जब शिव की आराधना करता है, मां गंगा की आरती उतारता है, या सेंगोल को नए संसद भवन में स्थापित करता है, तो पूरा देश अपनी प्राचीन महानता से एकाकर हो जाता है। यह नया भारत है जो अपनी प्राचीन आध्यात्मिक जड़ों से ऊर्जा लेकर आधुनिक विज्ञान और तकनीक के आसमान को छू रहा है।

अन्नदाता का सम्मान: खेतों से खलिहानों तक समृद्धि किसानों को लेकर दशकों तक राजनीति होती रही, लेकिन उनकी ज़मीनी हालत सुधारने के प्रयास नाकाफी रहे। प्रधानमंत्री मोदी ने 'पीएम किसान सम्मान निधि' के जरिए एक ऐसी पारदर्शी व्यवस्था बनाई, जिसमें बिना किसी बिचौलिए के हर साल 6,000 रुपये सीधे किसानों के बैंक खाते में पहुंचते हैं। यह छोटी सी लगने वाली राशि छोटे और सीमांत किसानों के लिए बीज और खाद के समय बहुत बड़ा सहारा बन रही है।

इसके अलावा, नीम कोटेड यूरिया ने खाद की कालाबाज़ारी को खत्म किया, और 'सॉडल हेल्थ का र्ड' ने किसानों को उनकी ज़मीन की सेहत पहचानने में मदद की। मोटे अनाजों (Millets) को 'श्री अन्न' का नाम देकर उसे वैश्विक पटल पर स्थापित करना प्रधानमंत्री की दूरगामी सोच का ही हिस्सा है। इससे न केवल देश के छोटे किसानों की आय बढ़ रही है, बल्कि दुनिया को पोषण का एक नया विकल्प भी मिला है।

अमृत काल के युवा: स्टार्टअप से लेकर अंतरिक्ष तक की उड़ान
भारत युवाओं का देश है और देश के युवा ही इसके भविष्य के कर्णधार हैं। आज का युवा नौकरी के पीछे भागने के बजाय 'स्टार्टअप इंडिया' और 'स्टैंडअप इंडिया' के जरिए

अपने खुद के उद्यम स्थापित कर रहा है। 2014 से पहले देश में कुछ सौ स्टार्टअप्स हुआ करते थे, आज भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम बन चुका है, जहां 1 लाख से अधिक मान्यता प्राप्त स्टार्टअप्स और 100 से अधिक यूनिकॉर्न हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के जरिए शिक्षा व्यवस्था को रटने की प्रवृत्ति से निकालकर कौशल (Skill) और नवाचार (Innovation) आधारित बनाया गया है। क्षेत्रीय भाषाओं में मेडिकल और इंजीनियरिंग की पढ़ाई शुरू होने से ग्रामीण परिवेश से आने वाले युवाओं के सपने भी अब हकीकत में बदल रहे हैं। आज का युवा सिर्फ घरती पर ही नहीं, बल्कि अंतरिक्ष क्षेत्र (Space Sector) के निजीकरण के बाद वहां भी अपने स्टार्टअप्स के जरिए रॉकेट और सैटेलाइट लॉन्च कर रहा है।

रक्षा और राष्ट्रीय सुरक्षा: 'नया भारत घर में घुसकर मारता है'
राष्ट्रीय सुरक्षा के मोर्चे पर जो नीतिगत पंगुता दशकों तक हावी थी, मोदी सरकार ने उसे जड़ से खत्म कर दिया। उरी और पुलवामा आतंकी हमलों के बाद सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक करके भारत ने दुनिया को साफ संदेश दे दिया कि यह 'नया भारत' है, जो आतंकवाद को बर्दाश्त नहीं करेगा और जरूरत पड़ने पर सीमाओं के पार जाकर भी दुश्मन का खात्मा करेगा।

रक्षा क्षेत्र में भारत कभी दुनिया का सबसे बड़ा आयातक हुआ करता था, लेकिन आज 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान के तहत भारत रक्षा उपकरणों का निर्यात कर रहा है। ब्रह्मोस मिसाइलों से लेकर तेजस फाइटर जेट्स और स्वदेशी एयरक्राफ्ट कैरियर 'आईएनएस विक्रांत' तक, भारत की सेना अब स्वदेशी हथियारों से सुसज्जित होकर अजेय बन रही है। सीमाओं पर, विशेषकर चीन और पाकिस्तान की सीमा पर, सड़कों और पुलों का ऐसा जाल बिछाया गया है कि भारतीय सेना की पहुंच अब दुर्गम से दुर्गम इलाकों तक आसान हो गई है।

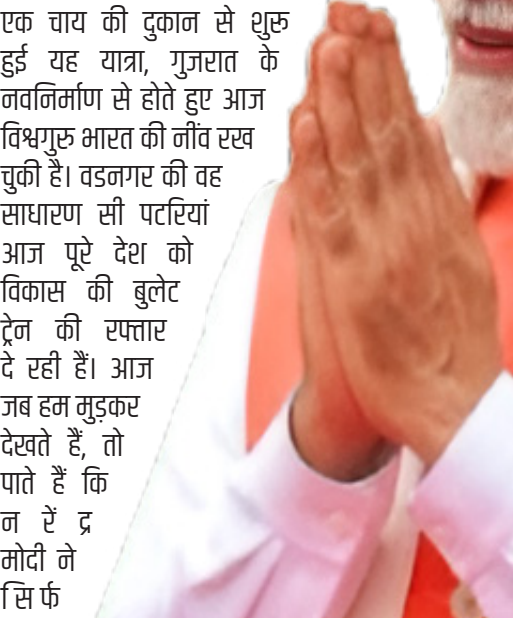
गरीब कल्याण: हर घर जल, हर घर राशन
प्रधानमंत्री मोदी अक्सर कहते हैं कि उनकी सरकार की सबसे बड़ी जाति 'गरीब' है। वैश्विक महामारी कोरोना के दौरान जब दुनिया के बड़े-बड़े देश अपनी अर्थव्यवस्थाओं को बचाने में जुझ रहे थे, तब भारत ने 'प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना' शुरू की। इसके तहत 80 करोड़ से अधिक देशवासियों को मुफ्त राशन सुनिश्चित किया गया, ताकि कोई भी गरीब रात को भूखा न सोए।

'जल जीवन मिशन' के तहत आज करोड़ों ग्रामीण घरों में नल से साफ जल पहुंच रहा है, जिसने ग्रामीण महिलाओं

को मीलों दूर से पानी होने की अमानवीय पीड़ा से मुक्ति दिलाई है। यह योजना न सिर्फ पानी दे रही है, बल्कि दूषित जल से होने वाली कई गंभीर बीमारियों से भी गरीबों को बचा रही है।

2047: 'विकसित भारत' का अटल संकल्प
प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की आंखें आज के राजनीतिक लाभ पर नहीं, बल्कि 2047 के उस 'विकसित भारत' पर टिकी हैं, जब देश अपनी आजादी के 100 वर्ष पूरे करेगा। वे देशवासियों से बार-बार 'पंच प्रण' का आह्वान करते हैं, जिसमें गुलामी की मानसिकता से मुक्ति, अपनी विरासत पर गर्व और नागरिक कर्तव्यों का पालन शामिल है।

उनका यह 76वां जन्मदिन सिर्फ उनके जीवन का एक और पड़ाव नहीं है, बल्कि यह करोड़ों देशवासियों के लिए उनके उस संकल्प को दोहराने का अवसर है जो उन्होंने लाल किले की प्राचीर से लिया था— **"यही समय है, सही समय है, भारत का अनमोल समय है।"**



योजनाएं नहीं बनाई, बल्कि इस देश के 140 करोड़ लोगों के

आशीर्वाद का दिया

लाखों लोगों ने रोशन किया ‘आशीर्वाद का दीया’

वडनगर की पटरियों से विश्व पटल तक, नए भारत के शिल्पकार की ऐतिहासिक यात्रा। एक साधारण चाय वाले से लेकर दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के प्रधानसेवक बनने तक की कहानी। 76वें जन्मदिवस पर पूरा देश दे रहा है उस नेतृत्व को शुभकामनाएं, जिसने भारत को उसका खोया हुआ गौरव लौटाया है।

17 सितंबर का दिन भारतीय इतिहास में सिर्फ एक तारीख नहीं, बल्कि 'सेवा और समर्पण' का पर्याय बन चुका है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के 76वें जन्मदिवस पर पूरे देश में जो 'आशीर्वाद का दीया' जलाया गया, वह किसी राजनीतिक उत्सव का हिस्सा नहीं था, बल्कि एक कृतज्ञ राष्ट्र की सच्ची भावना का प्रकटीकरण था। यह दीया उन करोड़ों झोपड़ियों, पक्के मकानों, किसानों के खेतों और महिलाओं की रसोई में जला, जहां बीते एक दशक में विकास की रोशनी पहुंची है।

वडनगर के एक साधारण परिवार से निकलकर वैश्विक पटल पर भारत का परचम लहराने तक की नरेंद्र मोदी की यह यात्रा, दरअसल स्वतंत्र भारत के संघर्ष, संकल्प और सिद्धि की सबसे जीवंत गाथा है।

17 सितंबर 1950 को गुजरात के वडनगर में जन्मे नरेंद्र मोदी का बचपन घोर अभावों के बीच बीता।

रेलवे स्टेशन पर पिता की मदद करते हुए चाय बेचने से लेकर स्कूली शिक्षा पूरी करने तक, उनका शुरुआती जीवन ज़मीनी हकीकतों से जुड़ाते हुए गुजरता। इसी

पीड़ा, उसकी जरूरतों और उसकी आकांक्षाओं को इतनी गहराई से

समझने की दृष्टि दी कि आज उनकी हर योजना के केंद्र में वहीं 'आखिरी पंक्ति का व्यक्ति' खड़ा नज़र आता है।

युवावस्था की दहलीज पर कदम रखते ही उन्होंने अपना जीवन राष्ट्र को समर्पित करने का निर्णय लिया और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के प्रचारक बन गए। एक प्रचारक के रूप में उन्होंने पूरे देश का भ्रमण किया। कश्मीर की वादियों से लेकर कन्याकुमारी के तटों और पूर्वोत्तर के दुर्गम इलाकों तक, उन्होंने भारत की सांस्कृतिक विविधता और ज़मीनी समस्याओं को करीब से महसूस किया। संघ के अनुशासन और 'राष्ट्र प्रथम' की भावना ने उनके भीतर एक कुशल और अजेय संगठनकर्ता के बीज बोए।

1980 के दशक के अंत में भारतीय जनता पार्टी में संगठन का काम संभालने के बाद, 2001 में उनके जीवन में एक बड़ा मोड़ आया। विनाशकारी भूकंप से तबाह हुए गुजरात के नवनिर्माण की जिम्मेदारी उन्हें मुख्यमंत्री के तौर पर सौंपी गई। यहीं से उस 'गुजरात मॉडल' का जन्म हुआ, जिसने पूरे देश का ध्यान खींचा।

नरेंद्र मोदी ने आपदा को अवसर में बदला। 'ज्योतिग्राम योजना' से 24 घंटे बिजली, सूखी नदियों में नर्मदा का पानी, 'वाइब्रेट गुजरात' के जरिए वैश्विक निवेश और कृषि विकास दर को दहाई के अंकों में पहुंचाकर उन्होंने सुशासन की एक नई परिभाषा गढ़ी। वे लगातार 13 वर्षों तक गुजरात के अजेय और सर्वाधिक लोकप्रिय मुख्यमंत्री रहे। गुजरात में विकास के उनके ट्रैक रिकॉर्ड ने पूरे देश में एक नई उम्मीद जगाई। 2014 के लोकसभा चुनावों में भारत की जनता ने तीन दशक बाद किसी एक पार्टी को पूर्ण बहुमत देकर नरेंद्र मोदी को देश का प्रधानमंत्री चुना। 2019 में यह जनानदेश और भी विशाल हो गया।

उन्होंने भारत की राजनीति की धुरी को

जाति और तुष्टिकरण से हटाकर विशुद्ध रूप से 'विकास और जन-कल्याण' पर केंद्रित कर दिया। प्रधानमंत्री के तौर पर उनका कार्यकाल उन योजनाओं के लिए याद रखा जाएगा, जिन्होंने आम आदमी का जीवन स्तर ऊपर उठाया।

'जन-धन योजना' के तहत करोड़ों बैंक खाते खोलकर बिचौलियों की व्यवस्था को खत्म किया गया। 'उज्ज्वला योजना' से घुएं से मुक्ति मिली और 'स्वच्छ भारत अभियान' के तहत करोड़ों शौचालय बनाकर महिलाओं को सम्मान दिया गया। वहीं, 'आयुष्मान भारत' से 5 लाख तक का मुफ्त इलाज और 'पीएम आवास योजना' से 4 करोड़ से ज्यादा पक्के घर गरीबों को सौंपे गए।

जिस इच्छाशक्ति का देश दशकों से इंतज़ार कर रहा था, वह मोदी सरकार में देखने को मिली। जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 और 35A को हटाकर उसे सही मायनों में भारत का अभिन्न अंग बनाना, पांच सदी के संघर्ष के बाद अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण व प्राण-प्रतिष्ठा, और मुस्लिम महिलाओं को न्याय दिलाते हुए तीन तलाक जैसी कुर्रब का अंत उनके दृढ़ राजनीतिक संकल्प का प्रमाण है।

आज भारत की तस्वीर बदल चुकी है। वंदे भारत जैसी आधुनिक ट्रेन पटरियों पर दौड़ रही है, देश ने एक्सप्रेस-वे और नए एयरपोर्ट्स का जाल बिछ रहा है। सबसे बड़ी बात, यूपीआई (UPI) के जरिए भारत आज डिजिटल पेमेंट में दुनिया का नेतृत्व कर रहा है। 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' के संकल्प ने रक्षा से लेकर अंतरिक्ष में चंद्रयान-3 की ऐतिहासिक सफलता तक भारत को नई ऊंचाइयां दी हैं। हमारी संस्कृति का मूल मंत्र 'अतिथि देवो भवः' प्रधानमंत्री मोदी की विदेश नीति में जीवंत रूप से



का साक्षात प्रमाण है कि यदि इरादे नेक हों, मातृभूमि के प्रति समर्पण हो और कठोर परिश्रम करने का माहा हो, तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं है।

आज जब 140 करोड़ भारतीय 'आशीर्वाद का दीया' जला रहे हैं, तो यह सिर्फ एक राजनेता की सफलता का जश्र नहीं है; यह एक ऐसे तपस्वी प्रधानसेवक के प्रति देश का अटूट विश्वास है, जिसने अपना हर पल सिर्फ और सिर्फ 'मां भारती' की सेवा में समर्पित कर दिया है।

नरेंद्र मोदी की यह 76 वर्षों की जीवन यात्रा इस बात

30 गेंदों में जड़ा इतिहास का सबसे तेज शतक

किसी भी टेस्ट क्रिकेट नेशन खेलने वाले खिलाड़ी का टी20 क्रिकेट में सबसे तेज शतक



● प्रकाश त्रिपाठी

भारतीय क्रिकेट टीम के युवा और विस्फोटक ओपनर अभिषेक शर्मा ने टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में एक नया और ऐतिहासिक कीर्तिमान स्थापित कर दिया है। उन्होंने अफगानिस्तान के खिलाफ खेले गए मुकाबले में अफगानी गेंदबाजों की जमकर धुनाई करते हुए मात्र 30 गेंदों में अपना तूफानी शतक पूरा कर लिया।

यह शतक क्रिकेट इतिहास में किसी भी टेस्ट खेलने वाले देश के बल्लेबाज द्वारा टी20 फॉर्मेट में जड़ा गया सबसे तेज शतक बन गया है। अभिषेक शर्मा ने मैदान के हर कोने में बड़े-बड़े शॉट्स लगाए और अपनी इस ऐतिहासिक

और बेहद आक्रामक पारी के दौरान केवल 34 गेंदों का सामना करते हुए कुल 108 रनों की अविश्वसनीय पारी खेली। उनकी इस बल्लेबाजी ने विरोधी टीम के गेंदबाजों को पूरी तरह से बैकफुट पर धकेल दिया।

अभिषेक के इस रौद्र रूप और ताबड़तोड़ बल्लेबाजी के दम पर भारतीय टीम ने महज 15 ओवरों के खेल में ही 3 विकेट के नुकसान पर 184 रनों का विशाल स्कोर खड़ा कर दिया। इस बड़े स्कोर में विकेटकीपर बल्लेबाज संजू सैमसन ने भी अपना अहम योगदान दिया। सैमसन ने भी शानदार फॉर्म दिखाते हुए अपना बेहतरीन अर्धशतक (50 रन) पूरा किया और अभिषेक के साथ एक मजबूत साझेदारी निभाई।

दोनों बल्लेबाजों ने मिलकर क्रीज पर ऐसी आतिशबाजी की जिससे दर्शकों का भरपूर मनोरंजन हुआ। अगर इस पूरी सीरीज में अभिषेक शर्मा के प्रदर्शन की बात करें, तो उन्होंने अपने बल्ले से जमकर आग उगली है। उन्होंने पूरी सीरीज के दौरान 269.41 के बेहद ही अविश्वसनीय स्ट्राइक रेट से कुल 229 रन बनाए।

उनके इस निरंतर आक्रामक और शानदार प्रदर्शन के लिए उन्हें न केवल 'प्लेयर ऑफ द मैच' चुना गया, बल्कि 'प्लेयर ऑफ द सीरीज' के बड़े खिताब से भी सम्मानित किया गया।

मैच के बाद अपनी इस अभूतपूर्व सफलता पर बात करते

हुए अभिषेक शर्मा ने इसका श्रेय टीम मैनेजमेंट को दिया। उन्होंने कहा कि भारतीय टीम पिछले दो सालों से लगातार इसी आक्रामक रवैये और निडर मानसिकता के साथ क्रिकेट खेल रही है।

उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि खिलाड़ियों के इस बेरबौफ अंदाज के पीछे टीम के कप्तान और कोच का पूरा समर्थन है, जो उन्हें अपना स्वाभाविक खेल खेलने की पूरी आजादी देते हैं।

भारत का 3-0 से क्लीन स्वीप: ताश के पत्तों की तरह बिखरा अफगानिस्तान, लेकिन मध्यक्रम की लय पर उठे सवाल

दिल्ली। भारतीय क्रिकेट टीम ने दिल्ली में खेले गए तीसरे और अंतिम टी20 मुकाबले में अफगानिस्तान को 127 रनों के भारी अंतर से रौंदकर सीरीज पर 3-0 से क जा जमा लिया है।

भारत द्वारा दिए गए 222 रनों के लक्ष्य (221/7) का पीछा करने उतरी अफगानी टीम का प्रदर्शन बेहद लचर रहा और पूरी टीम महज 94 रनों पर ढेर हो गई।

अफगानिस्तान ने बिना कोई विकेट खोए 31 रन बनाकर अच्छी शुरुआत की थी, लेकिन इसके बाद उनकी पारी पूरी तरह ढह गई। कप्तान

इब्राहिम जादरान को छोड़कर कोई भी अन्य बल्लेबाज 20 रन का आंकड़ा तक नहीं छु सका। भारत की शानदार गेंदबाजी के आगे अफगानी बल्लेबाजों ने घुटने टेक दिए। कप्तान श्रेयस अय्यर ने पावरप्ले में चतुराई से स्पिनरों को मोर्चे पर लगाया और अक्षर पटेल ने अपने पहले ही ओवर में दो विकेट झटक कर कप्तान के फैसले को सही साबित किया।

रवि बिश्नोई ने भी तीन विकेट अपने नाम किए, जबकि जसप्रीत बुमराह ने अपनी घातक रॉकिंग से विकेट उखाड़ा। मैच के असली हीरो नीतीश कुमार रेड्डी साबित हुए, जिन्होंने एक ही

ओवर में तीन विकेट चटकाकर अफगानिस्तान की रही-सही उम्मीद भी खत्म कर दी। जीत के बावजूद सामने आई भारत की ये कमियां: सीरीज में एकतरफा जीत के बावजूद भारतीय टीम की कुछ कमजोरियां भी उजागर हुईं।

मध्यक्रम का लड़खड़ाना: अभिषेक शर्मा और संजू सैमसन के आउट होने के बाद भारतीय पारी अपनी पूरी लय खो बैठी। श्रेयस अय्यर और अन्य बल्लेबाज गेंद को सही तरह से टाइम करने में संघर्ष करते नजर आए, जिससे अंतिम ओवरों में रन गति प्रभावित हुई।

तेज गेंदबाजों की महंगी शुरुआत: हालांकि नीतीश कुमार रेड्डी ने बाद में शानदार गेंदबाजी की, लेकिन शुरुआती स्पेल में वह और यश ठाकुर दोनों ही काफी महंगे साबित हुए और उन्होंने काफी रन लुटाए।

अफगानिस्तान पर इस शानदार जीत के बाद अब भारतीय टीम का पूरा ध्यान वेस्टइंडीज के खिलाफ होने वाली अगामी टी20 और वनडे सीरीज पर केंद्रित होगा, जहां टीम प्रबंधन इन कमियों को दूर कर एक संतुलित प्रदर्शन करना चाहेगा।



इंदौर के होलकर स्टेडियम में भारत-वेस्टइंडीज टी-20 मुकाबला

इंदौर। इंदौर के होलकर स्टेडियम में 11 अक्टूबर को खेले जाने वाले भारत और वेस्टइंडीज के रोमांचक टी-20 मुकाबले के लिए टिकटों का आधिकारिक शेड्यूल जारी कर दिया गया है। मैच को लेकर शहर के क्रिकेट प्रेमियों में ख्वासा उत्साह है और बड़ी संख्या में दर्शकों के स्टेडियम पहुंचने की उम्मीद है।

मध्य प्रदेश क्रिकेट संघ (MPCA) के अनुसार, टिकटों

की बिक्री अलग-अलग श्रेणियों में की जाएगी। विद्यार्थी और दिव्यांग कोटा के तहत स्टूडेंट कन्सेशन और स्पेशली एबल (दिव्यांग) सेक्शन के लिए 22 सितंबर को दोपहर 12 बजे से रजिस्ट्रेशन शुरू होगा।

यह प्रक्रिया 23 सितंबर दोपहर 12 बजे तक या निर्धारित कोटा समाप्त होने तक जारी रहेगी। इच्छुक दर्शकों को समय रहते पंजीकरण कराने की सलाह दी गई है।

वहीं, जनरल कैटेगरी के टिकटों की ऑनलाइन बिक्री 25 सितंबर को सुबह 6 बजे से शुरू होगी। मैच के सभी ऑनलाइन टिकट केवल District by Zomato ऐप और वेबसाइट के माध्यम से उपलब्ध होंगे।

MPCA ने क्रिकेट प्रेमियों से अपील की है कि वे टिकट अधिकृत माध्यम से ही खरीदें और अनधिकृत

वेबसाइटों या दलालों से टिकट लेने से बचें। भारत और वेस्टइंडीज के बीच होने वाला यह मुकाबला इंदौर में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के रोमांच को एक बार फिर लेकर आएगा। टिकटों की बिक्री शुरू होने के साथ ही दर्शकों के बीच मैच देखने को लेकर उत्सुकता और बढ़ने की संभावना है।

मनोरंजनम्

‘आशीर्वाद का दीया’



● प्रकाश त्रिपाठी

मुंबई। जब देश के प्रधानसेवक का जन्मदिवस 'सेवा पर्व' के रूप में मनाया जा रहा हो, तो उन्हें मिलने वाली सबसे अनमोल भेंट भी वहीं होती है जो सीधे जनता के दिलों से निकले।

17 सितंबर को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के 76वें जन्मदिवस के अवसर पर रिलीज हुए विशेष गीत 'आशीर्वाद का दीया' ने ठीक यही काम किया है। महज कुछ ही दिनों में इस गीत ने न केवल आम जनता का, बल्कि स्वयं प्रधानमंत्री का दिल छू लिया है। यह गीत उन करोड़ों लाभार्थियों के सच्चे जज़्बातों का दर्पण है, जिनके घरों का अंधेरा विकास की रोशनी से दूर हुआ है।

एक बेहतरीन गीत तब कालजयी बनता है, जब उसके शब्द और धुन दोनों में रुह बसती हो। 'आशीर्वाद का दीया' में यह कमाल संगीतकार अमन पंत और गीतकार वैशाली शाह ने कर दिखाया है।

वैशाली शाह के लिखे शब्द उस आम भारतीय महिला की कहानी बयां करते हैं जो उस नेतृत्व को दुआएं दे रही है जिसने उसके जीवन को सुधारा है। वहीं, अमन पंत का संगीत इस गीत को एक ऐसा आध्यात्मिक और भावनात्मक ढ़हराव देता है, जो सीधे

सुनने वाले के अंतर्मन में उतर जाता है।

इस गीत का सबसे मजबूत पक्ष है इसकी आवाज़, जिसे अपनी मखमली और रुहानी गायकी से सजाया है बेहद टैलेंटेड गायिका स्नेहा शंकर ने।

मशहूर संगीतकार राम शंकर जी की सुपुत्री और महान 'शंकर-शंभू' सूफी घराने की सांगीतिक विरासत को आगे बढ़ा रही स्नेहा ने इस गीत में जो सुकून और अपनापन डाला है, वह बेमिसाल है।

बचपन में हॉलीवुड फिल्म 'द लायन किंग' में अपनी आवाज़ देने से लेकर, 'इंडियन आइडल' के मंच पर अपनी गायकी का लोहा मनवाने और ए.आर. रहमान जैसे दिग्गजों के निर्देशन ('चौद के टुकड़े') में काम करने तक—स्नेहा का सफर शानदार रहा है। 'आशीर्वाद का दीया' उनके करियर का एक ऐसा मील का पत्थर बन गया है, जो सीधे राष्ट्र की भावनाओं से जुड़ा है।

इतनी कम उम्र में इतनी बड़ी उपलब्धियां और इतने बड़े प्रोजेक्ट्स का हिस्सा बनने के बावजूद, स्नेहा शंकर की सबसे बड़ी खासियत उनका ज़मीन से जुड़ा और विन्नर होना है। हाल ही में उनसे हुई एक खास मुलाकात में यह स्पष्ट रूप से नज़र आया कि संगीत उनके लिए सिर्फ एक पेशा नहीं, बल्कि एक साधना है।

सफलता के शिखर पर होने के बावजूद उनकी सादगी इस बात का प्रमाण है कि वे किस समृद्ध सांगीतिक और पारिवारिक संस्कार से आती हैं।

‘आशीर्वाद का दीया’ सिर्फ एक गीत नहीं, बल्कि एक कृतज्ञ राष्ट्र का ट्रिब्यूट है। स्नेहा शंकर, अमन पंत और वैशाली शाह की इस तिकड़ी ने साबित कर दिया है कि जब संगीत को सेवा और जन-भावनाओं के साथ पिरोया जाता है, तो वह सीधा लोगों के दिलों में अपनी जगह बना लेता है।

स्नेहा शंकर के जादुई सुरों ने दी पीएम मोदी को जन्मदिवस की सबसे भावुक सौगात प्रधानमंत्री के 76वें जन्मदिवस पर रिलीज हुए इस विशेष गीत में संगीतकार अमन पंत, गीतकार वैशाली शाह और गायिका स्नेहा शंकर ने पिरोई करोड़ों देशवासियों की भावनाएं।

गीत की चर्चा का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी रहा कि इसके रिलीज होने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वयं सोशल मीडिया पर इस पर प्रतिक्रिया दी। उन्होंने 'आशीर्वाद का दीया' को स्नेह की ऐसी अभिव्यक्ति बताया, जिसने उन्हें गहराई से प्रभावित किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि हर आशीर्वाद भारत की सेवा करने के उनके संकल्प को और मजबूत करता है। उनकी यह प्रतिक्रिया सामने आने के बाद गीत को लेकर लोगों की दिलचस्पी और बढ़ी।

इस गीत की तैयारी भी कम समय में पूरी हुई। अमन पंत और स्नेहा शंकर के अनुसार, गीत पर काम प्रधानमंत्री के जन्मदिन से करीब सात दिन पहले शुरू किया गया था। पहले वैशाली शाह ने गीत के बोल तैयार किए, जिसके बाद संगीत और गायन पर काम हुआ। जन्मदिन से दो दिन पहले तक गीत को अंतिम रूप दे दिया गया था। इतने कम समय में तैयार हुई यह प्रस्तुति अपने निर्माण की प्रक्रिया के लिहाज से भी खास रही। 'आशीर्वाद का दीया' को प्रधानमंत्री के

सार्वजनिक जीवन के 25 वर्ष पूरे होने के संदर्भ में भी प्रस्तुत किया गया है।

इसका वीडियो दीपक को केंद्रीय प्रतीक के रूप में इस्तेमाल करता है और परिवारों तथा आम लोगों से जुड़े दृश्य दिखाता है। वीडियो में इन दृश्यों को सरकार की विभिन्न योजनाओं और पहलों के प्रभाव के रूप में प्रस्तुत किया गया है। अंत में प्रधानमंत्री की तस्वीर के साथ 'जन सेवा से' संदेश दिखाई देता है।

गीत की पूरी प्रस्तुति में दीपक सिर्फ एक दृश्य तत्व नहीं, बल्कि शुभकामना और स्नेह के प्रतीक के तौर पर सामने आता है। इसी विचार को व्यापक स्तर पर भी अभियान का हिस्सा बनाया गया, जिसमें 17 सितंबर को लोगों से अपने घरों में दीया जलाने की अपील की गई थी। इस तरह गीत, संगीत वीडियो और जन्मदिन से जुड़ी गतिविधियों ने एक ही प्रतीक—दीये—के माध्यम से अपनी अलग पहचान बनाई।



सिनेमा के सर्वोच्च शिखर पर अनंत नाग

50 साल, 250 फिल्में और अब 2024 का ‘दादा साहब फाल्के पुरस्कार’



मुंबई: भारतीय सिनेमा में अपने शानदार अभिनय और सहजता का लोहा मनवाने वाले दिग्गज अभिनेता अनंत नाग को वर्ष 2024 के प्रतिष्ठित 'दादा साहब फाल्के पुरस्कार' से सम्मानित किए जाने का ऐलान किया गया है। यह पुरस्कार उनके 50 वर्षों के सुदीर्घ, बेदाग और प्रेरणादायक सिनेमाई सफर को राष्ट्र की ओर से एक सच्ची श्रद्धांजलि है।

50 साल का बेमिसाल सफर और 250 से ज्यादा फिल्में अनंत नाग का नाम उन चुनिंदा अभिनेताओं में शुमार है, जिन्होंने पर्दे पर अपने हर किरदार को पूरी शिद्दत के साथ जीवंत किया है। अपने पांच दशक लंबे करियर में उन्होंने 250 से अधिक फिल्मों में काम किया है।

गंभीर चरित्रों से लेकर पारिवारिक और समानांतर सिनेमा तक, उन्होंने अपनी बहुमुखी प्रतिभा से दर्शकों के दिलों में एक खास और स्थायी जगह बनाई है। उनका यह सफर आज की नई पीढ़ी के कलाकारों के लिए एक चलती-फिरती 'अभिनय की पाठशाला' के समान है।

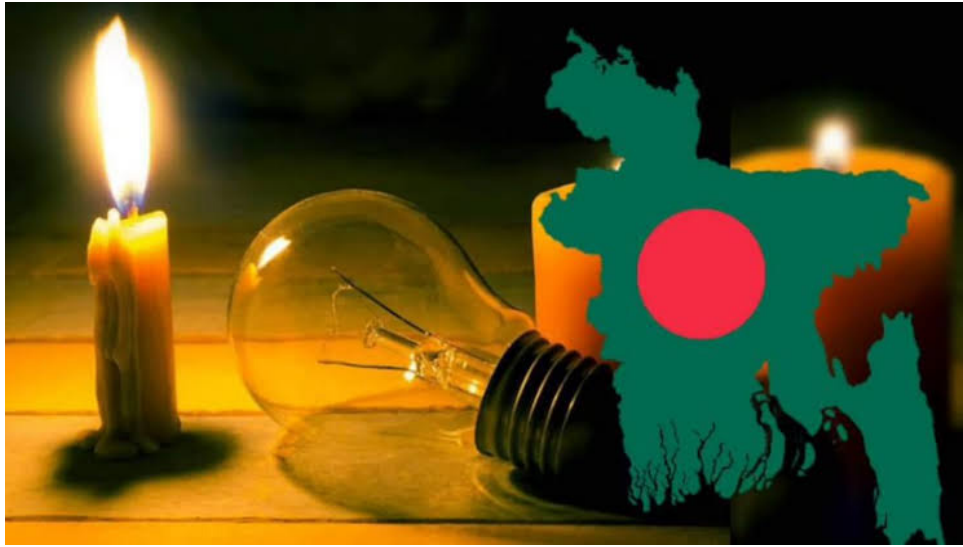
गुजरात में सजेगा 72वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों का मंच इस वर्ष यह प्रतिष्ठित सम्मान समारोह राजधानी दिल्ली की बजाय गुजरात में आयोजित किया जा रहा है। अगामी 22 सितंबर को गुजरात में होने वाले 72वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार समारोह के दौरान अनंत नाग को भारतीय सिनेमा के इस सर्वोच्च सम्मान से नवाजा जाएगा। इस भव्य आयोजन में सिनेमा जगत और देश की कई नामचीन हस्तियां शिरकत करेंगी।

व्या है दादा साहब फाल्के पुरस्कार का इतिहास? भारतीय सिनेमा के पितामह कहे जाने वाले धुंडीराज गोविंद फाल्के (दादा साहब फाल्के) की स्मृति में दिया जाने वाला यह भारत सरकार का सर्वोच्च सिनेमाई सम्मान है।

इस पुरस्कार की शुरुआत वर्ष 1969 में की गई थी, जिसका मुख्य उद्देश्य भारतीय सिनेमा के विकास और संवर्धन में असाधारण योगदान देने वाले कलाकारों को सम्मानित करना है। इस पुरस्कार से सम्मानित होने वाली पहली हस्ती मशहूर अभिनेत्री देविका रानी थीं। तब से लेकर आज तक यह पुरस्कार भारतीय फ़िल्म जगत की सबसे बड़ी और ऐतिहासिक उपलब्धि माना जाता है।



टॉर्च की रोशनी में इलाज और 12-12 घंटे का कट: आखिर हमारे पड़ोसी बांग्लादेश की बत्ती गुल क्यों है?



दिल्ली। जरा सोचिए, आप या आपका कोई अपना अस्पताल में भर्ती हो और अचानक बिजली चली जाए। जनरेटर का तेल भी खत्म हो और डॉक्टर को मोबाइल की टॉर्च जलाकर इलाज करना पड़े। यह किसी हॉरर फिल्म का सीन नहीं है, बल्कि हमारे पड़ोसी देश बांग्लादेश की आज की हकीकत है।

कभी अपनी तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के लिए दुनियाभर में वाहवाही लूटने वाला बांग्लादेश आज पिछले 20 सालों के सबसे भयंकर बिजली संकट से जूझ रहा है।

हालात इतने खराब हैं कि राजधानी ढाका से लेकर छोटे गांवों तक 10 से 12 घंटे तक बिजली गायब रह रही है। भीषण गर्मी के बीच इस 'पावर कट' ने आम आदमी से लेकर बड़े-बड़े कारखानों तक का दम निकास दिया है।

आम बोलचाल की भाषा में समझिए... आखिर यह नौबत आई क्यों?

अगर आप सोच रहे हैं कि वहां अचानक बिजली के तार टूट गए हैं या पावर प्लांट खराब हो गए हैं, तो ऐसा बिल्कुल नहीं है।

इस पूरी दिक्कत की जड़ में है- 'डॉलर की कमी'।

इसे ऐसे समझिए:

* ईंधन की किल्लत: बिजली बनाने के लिए कोयला, गैस या तेल चाहिए होता है। बांग्लादेश अपनी जरूरत का ज्यादातर ईंधन दूसरे देशों से खरीदता है। * खाली हो गई तिजोरी: विदेशी बाजार से जब आप कुछ खरीदते हैं, तो पेमेंट अपनी लोकल करेंसी (टके) में नहीं, बल्कि डॉलर में करना होता है। बांग्लादेश के पास विदेशी मुद्रा (डॉलर) का भंडार बहुत तेजी से घट गया है। * न पैसा, न कोयला: डॉलर की कमी के चलते बांग्लादेश सरकार

विदेशों से पर्याप्त कोयला और गैस नहीं खरीद पा रही है। जब पावर प्लांट्स (बिजलीघरों) को ईंधन ही नहीं मिलेगा, तो वो बिजली कैसे बनाएंगे? इसी वजह से वहां के कई बड़े बिजलीघर ठप पड़ गए हैं।

कारखानों पर लगा ताला, इकॉनमी को लग रहा झटका बांग्लादेश की कमाई का सबसे बड़ा जरिया वहां का कपड़ा उद्योग (Garment Industry) है। दुनिया भर के बड़े ब्रांड्स के कपड़े वहां बनते हैं। लेकिन बिजली न होने से मशीनें बंद पड़ी हैं। जनरेटर चलाने के लिए डीजल भी बहुत महंगा मिल रहा है।

ऐसे में वहां के व्यापारियों को हर दिन करोड़ों का नुकसान झेलना पड़ रहा है। अपना भारत मदद क्यों नहीं कर पा रहा? अब सवाल उठता है कि भारत तो हमेशा अपने पड़ोसियों की मदद करता है (जैसे श्रीलंका की थी),

तो फिर इस बार हम बांग्लादेश को ज्यादा बिजली क्यों नहीं दे रहे? इसके पीछे दो बड़ी और व्यावहारिक वजहें हैं:

* भारत में भी बिजली की भारी मांग: इन दिनों भारत में भी भीषण गर्मी और खेती-किसानी के चलते बिजली की डिमांड अपने चरम पर है। हमारी पहली प्राथमिकता अपने देश के लोगों और कारखानों को 24 घंटे बिजली देना है।

* तारों की क्षमता (ग्रिड लिमिटेशन): मान लीजिए भारत के पास थोड़ी अतिरिक्त बिजली आ भी जाए, तब भी हम उसे तुरंत बांग्लादेश नहीं भेज सकते। दोनों देशों के बीच जो बिजली भेजने वाली लाइन (क्रॉस-बॉर्डर ग्रिड) है, उसकी एक तय क्षमता है। अगर हम उस लाइन में क्षमता से ज्यादा करंट छोड़ेंगे, तो ग्रिड फेल हो सकता है और तार पिघल सकते हैं।

आगे क्या?

फिलहाल बांग्लादेश की सरकार ने अपने लोगों से थोड़ा सब्र रखने को कहा है। वो दुनिया के दूसरे देशों और संस्थाओं से कर्ज और मदद लेने की कोशिश कर रहे हैं ताकि ईंधन खरीदा जा सके। लेकिन एक बात साफ है, जब तक बांग्लादेश के खजाने में डॉलर वापस नहीं आते, तब तक वहां की जनता को इस भीषण गर्मी में बिना पंखे और कूलर के ही दिन काटने पड़ेंगे।

समुद्र के कचरे से बनेंगी पक्की सड़कें: हवाई के शोधकर्ताओं ने निकाला प्लास्टिक प्रदूषण का अनोखा समाधान

दिल्ली। हवाई (Hawaii) के शोधकर्ताओं ने समुद्री प्रदूषण और प्लास्टिक कचरे से निपटने के लिए एक बेहद शानदार और इको-फ्रेंडली समाधान खोजा है। अब समुद्र से निकाले गए पुराने फिशिंग नेट्स (मछली पकड़ने के जाल) और बेकार पड़े प्लास्टिक कचरे को डामर (asphalt) के साथ मिलाकर पक्की और टिकाऊ सड़कें बनाई जा रही हैं।

कचरे को मिला 'दूसरा जीवन'

हवाई के 'सेंटर फॉर मरीन डेब्रिस रिसर्च' (CMDR) की निदेशक जेनिफर लिंच और उनकी टीम के नेतृत्व में इस प्रोजेक्ट पर काम चल रहा है। आमतौर पर हवाई में सड़कों को मजबूत बनाने के लिए डामर में एक खास तरह का पॉलीमर (SBS) मिलाया जाता है। शोधकर्ताओं ने इसी वर्जिन पॉलीमर की जगह समुद्र से निकाले गए घातक कचरे और घरों से फेंके गए प्लास्टिक का सफलतापूर्वक इस्तेमाल किया है। इस प्रयोग ने उस समुद्री कचरे को एक 'नया जीवन' दे दिया है, जो जलीय जीवों के लिए काल बन चुका था।

पर्यावरण के लिए पूरी तरह सुरक्षित लोगों के मन में सबसे बड़ा सवाल यह था कि क्या इन सड़कों के घिसने से पर्यावरण में माइक्रोप्लास्टिक फैलेगा? शुरुआती वैज्ञानिक परीक्षणों में इसके नतीजे बेहद सकारात्मक रहे हैं। वैज्ञानिकों ने पाया कि इन 'प्लास्टिक-मिश्रित' सड़कों से सामान्य सड़कों की तुलना में ज्यादा माइक्रोप्लास्टिक नहीं निकलता है।

दरअसल, प्लास्टिक उच्च तापमान पर डामर (बाइंडर) के साथ इतनी अच्छी तरह पिघलकर मिल जाता है कि उसके कण अलग से बाहर नहीं आते। दिलचस्प बात यह है कि सड़क पर चलने वाले वाहनों के टायरों के घिसने से निकलने वाला प्रदूषण, इस प्लास्टिक वाली सड़क से निकलने वाले कणों की तुलना में बहुत अधिक होता है। दो बड़े संकों का एक बेहतरीन इलाज



अगर भविष्य के परीक्षणों में भी ये सड़कें लंबी अवधि तक टिकाऊ साबित होती हैं, तो यह तकनीक पूरी दुनिया के लिए एक बड़ी मिसाल बन सकती है।

इसके दो सीधे फायदे हैं:

पहला— समुद्र में मौजूद जानलेवा कचरे में भारी कमी आएगी, और दूसरा— शहर के बाहर कचरे से भर चुके लैंडफिल (Landfills) की समस्या से छुटकारा मिलेगा। यह रिसर्च इस बात का मजबूत प्रमाण है कि अगर समाज सस्टेनेबिलिटी को प्राथमिकता दे और सही तकनीक का इस्तेमाल करे, तो कचरे के पहाड़ को भी बुनियादी ढांचे के विकास की नींव बनाया जा सकता है।

इस परियोजना की खासियत सिर्फ समुद्री कचरे को सड़क निर्माण में इस्तेमाल करना नहीं है, बल्कि यह भी देखना है कि ऐसी सड़कें लंबे समय तक किस तरह प्रदर्शन करती हैं। शोधकर्ताओं के लिए सड़क की मजबूती, तापमान में बदलाव, भारी वाहनों का दबाव और लगातार यातायात जैसे कई कारक महत्वपूर्ण हैं। इसलिए शुरुआती सफल परीक्षणों के बाद अब इस तकनीक की दीर्घकालिक क्षमता का आकलन किया जा रहा है।

फिशिंग नेट्स इस समस्या का एक गंभीर

हिस्सा हैं। समुद्र में छोड़े गए या खोए हुए जाल लंबे समय तक पानी में बने रह सकते हैं और इनमें मछलियां, कछुए तथा अन्य समुद्री जीव फंस सकते हैं। इन्हें समुद्र से निकालकर सड़क निर्माण में इस्तेमाल करना ऐसे कचरे के सुरक्षित निपटारे का एक वैकल्पिक रास्ता उपलब्ध कराता है। साथ ही, घरों और अन्य स्रोतों से निकलने वाले कुछ प्लास्टिक कचरे को भी उपयोगी निर्माण सामग्री में बदला जा सकता है।

हालांकि वैज्ञानिक इस तकनीक को बड़े पैमाने पर लागू करने से पहले कई पहलुओं की जांच कर रहे हैं। इनमें सड़क की उम्र, रखरखाव की जरूरत, अलग-अलग मौसम में इसका प्रदर्शन और निर्माण प्रक्रिया की लागत शामिल हैं। इसके अलावा यह भी जरूरी होगा कि सड़क निर्माण में इस्तेमाल होने वाले प्लास्टिक की गुणवत्ता और संरचना को नियंत्रित किया जाए।

यदि इन परीक्षणों में तकनीक लगातार सफल रहती है, तो इसका इस्तेमाल उन क्षेत्रों में किया जा सकता है जहां समुद्री प्लास्टिक और सड़क निर्माण, दोनों बड़ी चुनौतियां हैं। इस तरह कचरे को केवल हटाने के बजाय उसे उपयोगी संसाधन में बदलने की दिशा में एक व्यावहारिक मॉडल विकसित हो सकता है।

व्यापार:-व्यवसाय:



टाटा ग्रुप में पावर वार: नोएल टाटा और चंद्रशेखरन आमने-सामने, AGM में हो सकता है बड़ा फैसला

● कार्तिका गोठवाल

टाटा ग्रुप के अंदर चल रही वर्चस्व की लड़ाई अब कोर्ट तक पहुंच सकती है। टाटा ट्रस्ट्स ने सीनियर वकील अभिषेक मनु सिंघवी को कानूनी सलाह और प्रतिनिधित्व के लिए नियुक्त किया है। यह विवाद तब शुरू हुआ जब टाटा संस के बोर्ड ने एन चंद्रशेखरन को फिर से चेयरमैन नियुक्त करने पर सहमति दे दी। जिसके बाद टाटा ट्रस्ट्स के मुखिया नोएल टाटा ने बयान जारी कर इस नियुक्ति को नियमों के खिलाफ बताया था।

सिंघवी ने क्या कुछ कहा?

इस नियुक्ति के बाद अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा कि उन्हें बहुत दुख और अफसोस के साथ इस पूरे मामले का हिस्सा बनना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि वे रतन टाटा के साथ काम कर चुके हैं। साथ ही इस मामले के दोनों पक्षों को भी अच्छे से जानते हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर सिंघवी लिखते हैं, 'शेयरहोल्डर के मालिकाना हक को बेकार कर देने से सैकड़ों भारतीय कंपनियों के सामने संकट खड़ा हो जाएगा। इससे उनके कॉरपोरेट गवर्नेंस का बुरा नतीजा निकलेगा।'

उन्होंने टाटा-मिश्री विवाद को भी जिंक अपने पोस्ट में किया है। उनका कहना है कि सुप्रीम कोर्ट ने इस विवाद पर टाटा ट्रस्ट्स को स्पष्ट तौर पर प्राथमिकता दी गई थी। सिंघवी लिखते हैं कि उस फैसले को भुला दिया गया है। उन्होंने कहा कि दुर्भाग्य से आपसी सहयोग और सौहार्द की कमी की वजह से इस पूरे मामले में अब समाधान का सिर्फ कानूनी तरीका ही बचा है।

एन चंद्रशेखरन की नियुक्ति के बाद खड़ा हुआ विवाद



टाटा संस के मौजूदा चेयरमैन एन चंद्रशेखरन का कार्यकाल अगले साल फरवरी में समाप्त हो रहा है। उन्होंने फिर से खुद को ना चुनने की अपील की थी। लेकिन 17 सितंबर को टाटा संस की बोर्ड मीटिंग में फिर से उन्हें चेयरमैन नियुक्त करने का फैसला किया। इस नियुक्ति का टाटा ट्रस्ट्स के चेयरमैन नोएल टाटा ने विरोध किया। बता दें, टाटा संस में टाटा ट्रस्ट्स की कुल हिस्सेदारी 66 प्रतिशत है।

इन सबके बीच रिजर्व बैंक ने टाटा संस के एनबीएफसी न मानने की अपील ठुकरा दी थी। जिसके बाद अब टाटा संस की लिस्टिंग मौजूदा नियमों के अनुसार अनिवार्य हो गई है। वहीं, टाटा ट्रस्ट ऐसा नहीं चाहता है। वह लिस्टिंग को लेकर सहमत नहीं है।

विवाद अब केवल चेयरमैन की नियुक्ति तक सीमित नहीं रह गया है। 20 सितंबर

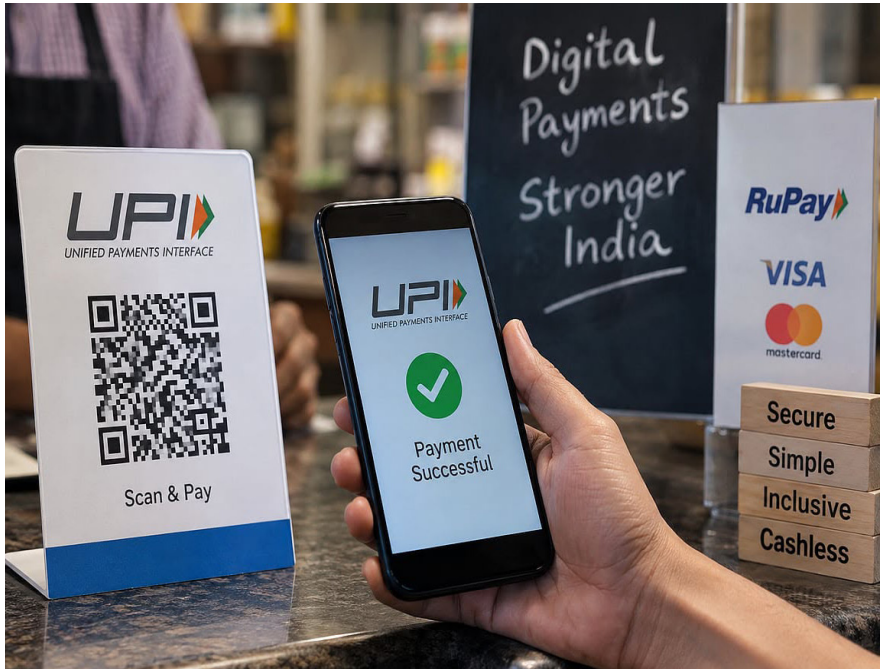
को टाटा ट्रस्ट्स ने एक विस्तृत बयान जारी कर 17 सितंबर को हुई एन. चंद्रशेखरन की पुनर्नियुक्ति पर औपचारिक आपत्ति जताई। ट्रस्ट्स का कहना है कि टाटा संस के आर्टिकल्स ऑफ एसोसिएशन में निर्धारित प्रक्रिया के मुताबिक उसके नामित निदेशकों की आवश्यक सहमति नहीं मिली थी। इसी आधार पर ट्रस्ट्स ने बोर्ड के फैसले की वैधता पर सवाल उठाया है।

इस विवाद में अब कानूनी राय की भूमिका भी महत्वपूर्ण हो गई है। अभिषेक मनु सिंघवी के टाटा ट्रस्ट्स की ओर से मैदान में आने के बाद मामला अदालत तक पहुंचने की संभावना बढ़ गई है। दूसरी ओर, टाटा संस की ओर से भी वरिष्ठ कानूनी सलाह ली जा रही है। इससे संकेत मिलता है कि आने वाले दिनों में कंपनी के बोर्ड अधिकार, शेयरधारकों के अधिकार और आर्टिकल्स ऑफ एसोसिएशन की

व्याख्या जैसे मुद्दे केंद्र में रह सकते हैं। दूसरा बड़ा मुद्दा टाटा संस की संभावित लिस्टिंग का है। टाटा संस के बोर्ड ने नियामकीय आवश्यकताओं के अनुपालन की दिशा में आगे बढ़ने का फैसला किया है, जबकि टाटा ट्रस्ट्स लंबे समय से कंपनी को निजी और गैर-सूचीबद्ध बनाए रखने के पक्ष में रहा है। ऐसे में चेयरमैन की पुनर्नियुक्ति और लिस्टिंग का विवाद एक-दूसरे से जुड़ गया है।

अब आगे की दिशा इस बात पर निर्भर करेगी कि दोनों पक्ष बोर्ड स्तर पर समाधान तलाशते हैं या विवाद औपचारिक कानूनी प्रक्रिया में जाता है। फिलहाल टाटा समूह के भीतर कॉरपोरेट गवर्नेंस, शेयरधारक अधिकार और भविष्य की संरचना से जुड़े सवाल चर्चा के केंद्र में हैं।

UPI पेमेंट्स पर अब MDR लगेगा, पर आम आदमी की जेब पर सीधा असर नहीं



● हिमांशु मिश्रा

UPI को लेकर एक अहम खबर आई है। सरकार ने बड़े merchant payments पर Merchant Discount Rate (MDR) लागू करने का फैसला किया है, और यह बदलाव 15 अक्टूबर 2026 से लागू होगा।

नियम के अनुसार, ₹2,000 से अधिक के कुछ खास UPI merchant लेनदेन पर 0.4 प्रतिशत की दर से MDR वसूला जाएगा। इसका भुगतान सीधे ग्राहक से नहीं होगा, बल्कि यह राशि merchant payment ecosystem के भीतर ही एडजस्ट होगी। ₹75,000 या उससे अधिक के लेनदेन में MDR की अधिकतम सीमा ₹300 तय की गई है।

सवाल यह उठता है कि क्या इससे आम उपभोक्ता को UPI इस्तेमाल करने के लिए कोई शुल्क चुकाना होगा। सरकार का कहना है कि नहीं। व्यक्ति-से-व्यक्ति यानी P2P लेनदेन बिल्कुल मुफ्त बना रहेगा, और ₹2,000 तक के merchant payments भी

इस दायरे से बाहर रहेंगे। सरकारी आंकड़ों के अनुसार करीब 96 प्रतिशत merchant लेनदेन इस नए MDR से अछूते रहेंगे।

छोटे दुकानदारों को भी राहत दी गई है

जिन merchants की UPI QR से मासिक प्राप्ति ₹1 लाख तक है, वे MDR के दायरे से बाहर रहेंगे।

हालांकि एक चिंता अब भी बनी हुई है: अगर UPI payment स्वीकार करने पर merchants को अतिरिक्त लागत उठानी पड़े, तो क्या वे इसे अपने उत्पादों की कीमत में जोड़ देंगे। सरकार ने इस पर स्पष्ट किया है कि merchants को यह बोझ ग्राहकों पर डालने की इजाजत नहीं होगी, और इसे रोकने के लिए एक निगरानी तंत्र पर भी काम चल रहा है।

फिलहाल आम उपभोक्ता के लिए UPI मुफ्त ही बना रहेगा। लेकिन बड़े merchant लेनदेन पर लगने वाले इस MDR का वास्तविक असर क्या होगा, यह 15 अक्टूबर के बाद इसके क्रियान्वयन और व्यापारियों के रवैये से ही साफ हो पाएगा।

बोर्ड रूम से लेकर रैंप तक कामयाबी का सफर, मिलिए 26 ब्यूटी क्राउन विजेता प्रिया तिवारी से



● प्रकाश त्रिपाठी

भोपाल । ‘देश दर्पण संवाद’ के हमारे विशेष पृष्ठ ‘सच्ची स्त्री रत्नम’ का उद्देश्य समाज की उस आधी आबादी की प्रेरक कहानियों को आपके सामने लाना है, जो अपनी मेहनत, लगन और जज्बे से विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य कर रही हैं और समाज के लिए एक नई मिसाल कायम कर रही हैं।

हम हर अंक में ऐसी ही सशक्त महिलाओं से रुबरु होते हैं। ‘स्त्री रत्नम’ की इस बार की हमारी खास मेहमान हैं—प्रिया तिवारी। अक्सर यह माना जाता है कि ‘ब्यूटी’ (सुंदरता) और ‘ब्रेन’ (बुद्धिमत्ता) का एक साथ मिलना दुर्लभ है। लेकिन, पेशे से इंजीनियर, कॉर्पोरेट दुनिया की दिग्गज लीडर और 26 ब्यूटी क्राउन अपने नाम कर चुकीं प्रिया तिवारी ने इस मिथक को पूरी तरह तोड़ दिया है।

वे एक ऐसी बहुआयामी शख्सियत हैं, जिन्होंने शिक्षा, साहित्य, समाज सेवा और

फैशन—हर मोर्चे पर अपनी कामयाबी का परचम लहराया है। इंस्टाग्राम पर एक ‘वैरिफाइड पब्लिक फिगर’ के रूप में उनके 96.9 हजार फॉलोअर्स हैं। आइए जानते हैं उनकी इस प्रेरणादायक यात्रा के बारे में। किताबों से कॉर्पोरेट की बुलंदियों तक इंदौर में जन्मी प्रिया डॉक्टरों के परिवार से आती हैं और अपने खानदान की इकलौती बेटी हैं। बचपन से ही मेधावी रहीं प्रिया ने अपनी स्कूली शिक्षा ग्वालियर के सेंट पॉल्स और भोपाल के बाल भवन स्कूल से पूरी की।

वे बेहतरीन वक्ता (डिबेटर) रही हैं और स्कूल में उन्हें ‘मिस बातूनी’ व ‘मिस हेल्पफुल’ जैसे खिताब मिले थे। आरजीपीवी से आईटी (ऑनर्स) में इंजीनियरिंग करने के बाद उन्होंने आईआईपीएम से एचआर व मार्केटिंग में डबल एमबीए किया, जहां उन्हें ‘स्टार एलुमनाई’ चुना गया। शिक्षा की उनकी ललक आज भी कायम है और वे फिलहाल एम.टेक की पढ़ाई कर रही हैं।

कॉर्पोरेट सेक्टर में उनके पास 13 वर्षों का शानदार अनुभव है। उन्होंने टेक महिंद्रा में ‘नेशनल मार्केटिंग हेड’ की भूमिका निभाने के साथ-साथ WWF इंडिया और CARE इंडिया जैसे संस्थानों में भी अहम पदों पर कार्य किया है और अपनी शानदार लीडरशिप साबित की है।

ग्लैमर की दुनिया में रखा कदम और छा गई कॉर्पोरेट करियर के शिखर पर पहुंचने के बाद साल 2022 में प्रिया ने अपने शौक यानी मॉडलिंग की ओर रुख किया और पीछे मुड़कर नहीं देखा। देखते ही देखते उन्होंने मिस सेंट्रल इंडिया 2023, मिस इंटरनेशनल वूचीन ऑफ इंडिया 2023, और मिस गोल्डन हार्ट 2022 सहित कुल 26 ताज अपने नाम कर लिए। हाल ही में उन्हें ‘क्वींस लीग ब्रांड एंबेसडर 2025’ और ‘फेस ऑफ इंडियन प्राइड वॉक 2025’ के खिताब से भी नवाजा गया है।

प्रिया **‘प्रिया फैशन ईवेंट’** की संस्थापक होने

के साथ-साथ ‘मिस्टर यूनिवर्स’ की नेशनल डायरेक्टर भी हैं। एक टेडएक्स (TEDx) स्पीकर और कई पत्रिकाओं की कवर गर्ल रहीं प्रिया ने बॉम्बे टाइम्स और पुणे टाइम्स जैसे प्रतिष्ठित फैशन वीक्स में शो-स्टॉपर के तौर पर अपना जलवा बिखेरा है।

उन्हें फैशन इंडस्ट्री में 50 से अधिक पुरस्कार मिल चुके हैं, जिनमें ऑल इंडिया तुमन अवीवर, एशिया सेनोरा और वीनस व्यूअर्स चॉइस अवार्ड शामिल हैं। उन्हें अमीषा पटेल, उर्वशी रौतेला, स्नेहा उल्लाल और अमन वर्मा जैसी हस्तियों ने सम्मानित किया है।

जल्द ही वे सांसद मनोज तिवारी जी के साथ शो-स्टॉपर के रूप में भी मंच साझा करनेवाली हैं। साहित्य, संस्कृति और समाज से गहरा नाता ग्लैमर की इतनी चकाचौंध के बीच प्रिया पूरी तरह से अपनी जड़ों से जुड़ी हुई हैं। वे नियमित योग करती हैं, भारतीय परिधान (विशेषकर साड़ी) पहनना पसंद करती हैं और सर्व ब्राह्मण समाज की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भी हैं।

उनके अंदर एक संवेदनशील कवयित्री भी बसती है, जिसकी रचनाएं अक्सर अखबारों और पुस्तकों (जैसे 57 पोएट्री) में छपती हैं। वे एक न्यूज चैनल में एंकर के तौर पर भी अपनी आवाज का जादू बिखेर चुकी हैं।

प्रिया अपने पिता स्वर्गीय डॉ. अतुल तिवारी को अपना आदर्श मानती हैं, जो खुद एक डॉक्टर, कवि, गायक और इंटरनेशनल अंपायर थे। अपने व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद प्रिया समाज सेवा को पूरी प्राथमिकता देती हैं। वे ‘स्वैंग एनजीओ’, ‘बेटी बचाओ फाउंडेशन’ और ‘वी हेल्प फाउंडेशन’ के साथ मिलकर बालिका शिक्षा और भुखमरी (हंगर डेडरेक्स) जैसे गंभीर विषयों पर जमीनी स्तर पर काम कर रही हैं।

इंजीनियर बाय क्वालिफिकेशन, मैनेजर बाय प्रोफेशन और मॉडल-कवयित्री बाय पैशन—प्रिया तिवारी सही मायनों में आज के दौर का एक सच्ची ‘स्त्री रत्न’ हैं।

में सभी महिलाओं से बस इतना कहना चाहूंगी कि अपने सपनों को कभी छोटा मत समझिए। एक महिला एक साथ कई भूमिकाएँ निभा सकती है—एक प्रोफेशनल, एक शिक्षिका, एक बेटी, एक पत्नी, एक माँ और अपने सपनों को जीने वाली एक खूबसूरत पहचान। मैंने खुद शिक्षा और अपने प्रोफेशन के साथ-साथ मॉडलिंग और ब्यूटी पेजेंट की दुनिया में अपनी पहचान बनाई है। मेरा मानना है कि Beauty और Brains एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे की ताकत हैं। खुद पर विश्वास रखिए, लगातार सीखते रहिए और अपनी पहचान बनाने के लिए कभी किसी की अनुमति का इंतजार मत कीजिए। आपकी मेहनत, आपकी सोच और आपका आत्मविश्वास ही आपकी सबसे बड़ी खूबसूरती है।

हर महिला के अंदर एक Queen है—बस उसे पहचानने और दुनिया के सामने लाने की जरूरत है।

- प्रिया तिवारी



विविध संवाद:

गजरी की महुआ कुकीज़ को मिलेगी बाजार की नई पहचान,

भोपाल प्रशिक्षण से बढ़े अवसर



सीधी / रवि शुक्ला : जंगल और गांवों में आसानी से उपलब्ध महुआ अब गजरी की महिलाओं के लिए सिर्फ पारंपरिक वन उपज नहीं, बल्कि बाजार में पहचान बनाने वाले उत्पाद का आधार बन रहा है। महिमा उत्पादक समूह द्वारा पहले से तैयार की जा रही महुआ कुकीज़ को अब बाजार की बदलती पसंद और मांग के अनुरूप और बेहतर बनाने की दिशा में पहल की गई है। इसी उद्देश्य से समूह की छह सदस्यीय टीम मंजू सिंह, कलावती साकेत, नॉन बाई सिंह, चंद्रावती साकेत, श्यामकली सिंह एवं गौरी साहू ने भोपाल में दो दिवसीय विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया।

प्रशिक्षण का आयोजन इंस्टीट्यूट ऑफ लाइवलीहुड रिसर्च एंड ट्रेनिंग संस्था एवं मध्य प्रदेश ग्रामीण आजीविका मिशन, जिला पंचायत सीधी के सहयोग से संचालित ‘रिस्टोर फॉर हरित भारत’ परियोजना के अंतर्गत किया गया। प्रशिक्षण में महिलाओं को महुआ से तैयार होने वाली कुकीज़ की गुणवत्ता, स्वाद, विविधता और बाजार की जरूरतों के अनुरूप उत्पाद विकास की आधुनिक तकनीकों से परिचित कराया गया।

बाजार की पसंद के अनुरूप उत्पाद में होगा निखार महिमा उत्पादक समूह की महिलाएं पहले से महुआ कुकीज़ तैयार कर रही हैं। भोपाल में मिले प्रशिक्षण का उद्देश्य उनके मौजूदा उत्पाद को और बेहतर बनाकर व्यापक बाजार की संभावनाओं से जोड़ना रहा।प्रशिक्षण के दौरान महिलाओं ने महुआ के

विंध्य की बेटी मान्या पाण्डेय, कम उम्र में कमाया बड़ा नाम, लोक गायिका का गौरवशाली सफर

देश दर्पण संवाद / शिवम शुक्ला

भोपाल- ‘देश दर्पण संवाद’ के ‘स्त्री रत्नम’ पृष्ठ पर आज हम एक ऐसी विलक्षण प्रतिभा से आपका परिचय करा रहे हैं, जिन्होंने यह साबित कर दिया है कि हुनर उम्र का मोहताज नहीं होता। हम बात कर रहे हैं विंध्य की माटी की बेटी और देश की सबसे छोटी लोक गायिका सीधी जिले की शान मान्या पाण्डेय की।

“कम उम्र में ज्यादा नाम” वाली कहावत मान्या पाण्डेय पर बिल्कुल सटीक बैठती है। इतनी छोटी सी उम्र में उन्होंने जो प्रसिद्धि हासिल की है, वह हर किसी को हैरत में डाल देती है।मान्या ने अपनी सुरीली और खनकती आवाज़ के दम पर न केवल मध्य प्रदेश, बल्कि पूरे देश में अपनी एक अनिट छाप छोड़ी है। उनकी प्रतिभा का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने हालही में देश की सुप्रसिद्ध लोक गायिका और विधायक मैथिली ठाकुर के साथ लोकसभा टीवी चैनल पर बघेली होली गीतों की शानदार प्रस्तुति दी थी।

उनकी इस मनमोहक प्रस्तुति ने पूरे देश में तहलका मचा दिया था, जो कि पूरे विंध्य क्षेत्र के साथ-साथ समूचे प्रदेश के लिए अत्यंत गौरव का क्षण था। आज के इस आधुनिक और डिजिटल युग में, जहाँ युवा पीढ़ी पाश्चात्य संगीत और संस्कृति की तरफ भाग रही है, वहीं मान्या हमारी पारंपरिक जड़ों को सींच रही हैं। वह मुख्य रूप से बघेली, अवधी और भोजपुरी भाषाओं में पूरी मधुरता के साथ पारंपरिक लोक गीत गाती हैं।

अपनी इसी सांस्कृतिक निष्ठा के कारण उन्होंने पूरे देश और प्रदेश में अपार प्रसिद्धि प्राप्त कर ली है। उनके सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स, चाहे वह फेसबुक हो या यूट्यूब, हर जगह उनके अनगिनत चाहने वाले हैं। उनके फॉलोअर्स की संख्या लगातार तेजी से बढ़ रही है और लोग उनके

गीतों का बेसब्री से इंतजार करते हैं। मान्या की प्रतिभा की गुंजां अब केवल आम जनता तक सीमित नहीं है, बल्कि राजनीतिक गलियारों और सत्ता के शीर्ष तक भी पहुँच चुकी है।

12 जनवरी 2025 को भोपाल के मुख्यमंत्री निवास में आयोजित ‘युवा संवाद’ जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम में उन्होंने हिस्सा लिया था, जहाँ उन्हें पूरे आत्मविश्वास के साथ मंच साझा करते देखा गया था। मान्या की मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री के साथ भी कई बार मुलाकात हो चुकी है।

मुख्यमंत्री ने स्वयं उनकी गायकी, उनके आत्मविश्वास और कला के प्रति उनके समर्पण की जमकर सराहना की है। प्रदेश और देश के कई बड़े राजनेता भी उनकी इस अद्भुत प्रतिभा के कायल हैं और उनकी तारीफ करते नहीं थकते। अपनी माटी की खुशबू को अपनी आवाज़ में पिरोकर दुनिया भर में फैलाने वाली मान्या पाण्डेय, सच मायनों में हमारे समाज की एक अनमोल ‘स्त्री रत्न’ हैं।

उन्होंने यह दिखा दिया है कि अपनी जड़ों और संस्कृति से जुड़े रहकर भी कामयाबी के सर्वोच्च शिखर को छुआ जा सकता है। विंध्य की इस होनहार बेटी का यह गौरवशाली सफर देश की हर बेटी और आज के युवाओं के लिए एक बहुत बड़ी प्रेरणा है।



कैमरे की नजर में होंगी दवा की दुकानें

क्या ‘सेल्फ-मेडिकेशन’ और ‘नशे’ पर लगाम कस पाएगा स्वास्थ्य मंत्रालय का यह मास्टरस्ट्रोक?

नई दिल्ली/भोपाल:

सर्दी-खांसी हुई तो मेडिकल स्टोर से एंटीबायोटिक ले ली, नींद नहीं आ रही तो बिना डॉक्टर से पूछे नींद की गोली खरीद ली—भारत में बिना पर्चे (प्रिस्क्रिप्शन) के दवाएं खरीदना एक आम दिनचर्या बन चुका है।

इसी खतरनाक आदत पर ब्रेक लगाने के लिए केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने ‘ड्रग रूल्स, 1945’ में संशोधन का ड्राफ्ट जारी कर देश के सभी मेडिकल स्टोर्स पर सीसीटीवी कैमरे लगाना अनिवार्य करने का प्रस्ताव दिया है।

लेकिन सबसे बड़ा सवाल यह है कि दशकों से चली आ रही इस व्यवस्था में अचानक कैमरे लगाने जैसी सख्ती की जरूरत क्यों आन पड़ी? यह कदम पब्लिक हेल्थ (जन स्वास्थ्य) के नजरिए से कितना महत्वपूर्ण है, आइए इसके पीछे की असली वजहों को समझते हैं: आखिर क्यों पड़ी इस सख्त नियम की जरूरत? (मुख्य कारण)

1. एंटीमाइक्रोबियल रेजिस्टेंस (AMR) का मंडराता खतरा: आजकल लोग हल्के बुखार या वायरल में भी सीधे मेडिकल स्टोर से हार्ड-डोज एंटीबायोटिक्स खरीद कर खा लेते हैं। बिना सही कोर्स और डॉक्टरी सलाह के एंटीबायोटिक खाने से शरीर के बैक्टीरिया उन दवाओं के प्रति अभ्यस्त (Resistant) हो जाते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)

इसे ‘साइलेंट पेडेमिक’ (खामोश महामारी) मानता है। अगर यही हाल रहा, तो भविष्य में छोटी सी चोट या संक्रमण में भी कोई दवा असर नहीं करेगी। सरकार इस ‘सेल्फ-मेडिकेशन’ को रोकना चाहती है।

2. नशीली दवाओं के दुरुपयोग (Drug Abuse) पर लगाम: शेड्यूल H, H1 और X कैटेगरी में एंटीबायोटिक्स के अलावा स्टेरॉयड, नींद की गोलियां, कफ सिरप (कोडीन युक्त) और कई ऐसी दवाएं आती हैं, जिनका इस्तेमाल नशे के लिए किया जाता है। युवा वर्ग बिना डॉक्टर की पर्ची के आसानी से मेडिकल स्टोर्स से ये दवाएं खरीद लेता है। कैमरे लगने से फार्मासिस्ट मनमाने ढंग से, चंद रुपयों के मुनाफे के लिए इन दवाओं को बेचने से डरेंगे।

3. झोलाछाप डॉक्टरों के सिंडिकेट को तोड़ना: देश के ग्रामीण और कस्बाई इलाकों में बिना डिग्री वाले कई झोलाछाप डॉक्टर धड़ल्ले से प्रैक्टिस कर रहे हैं। वे पर्चे पर गंभीर दवाएं लिख देते हैं और मेडिकल स्टोर वाले उन्हें बेच देते हैं। सीसीटीवी कैमरे और पर्चे की रिकॉर्डिंग अनिवार्य होने से यह पता चल सकेगा कि दवा किस डॉक्टर के प्रिस्क्रिप्शन पर दी गई है, जिससे इस अवैध तंत्र की जवाबदेही तय होगी।

4. फार्मासिस्ट की मनमानी और

मुनाफे का खेल: अक्सर देखने में आता है कि डॉक्टर जो दवा लिखता है, मेडिकल स्टोर संचालक ज्यादा मार्जिन (मुनाफे) के चक्कर में मरीज को दूसरी कंपनी की (Substitute) दवा पकड़ा देता है। कई बार गलत दवा देने से मरीज की जान पर बन आती है। कैमरे लगने से इस तरह की हेराफेरी पर सीधा लगाम लगेगा।

यह कदम कितना महत्वपूर्ण है? स्वास्थ्य मंत्रालय का यह प्रस्ताव भारत की स्वास्थ्य प्रणाली में पारदर्शिता लाने की दिशा में एक ‘गेम चेंजर’ साबित हो सकता है। अब तक दवा बिक्री की निगरानी सिर्फ कागजों और रजिस्ट्ररों में होती थी, जिसे आसानी से मैनिपुलेट (फर्जीवाड़ा) किया जा सकता था। ‘तीसरी आंख’ (कैमरे) की निगरानी से डिजिटल सबूत मौजूद रहेंगे।

यह सिर्फ एक कानूनी सख्ती नहीं है, बल्कि देशवासियों की जान बचाने की एक बड़ी पहल है। यह लोगों को यह भी सिखाएगा कि मेडिकल स्टोर कोई किराने की दुकान नहीं है, जहां से आप अपनी मर्जी से कोई भी ‘केमिकल’ शरीर में डाल लें। अगर यह प्रस्ताव सख्ती से लागू होता है, तो भविष्य में भारत एक बड़ी स्वास्थ्य त्रासदी (दवाओं के बेअसर होने की स्थिति) से खुद को बचा सकेगा।